## द्वितीय अध्याय

### शिवानी के कथा साहित्य का वर्गीकरण :

शिवानी जी मूलत: कथाकार हैं । इनके प्रकाशित कथा साहित्य को हम निम्नलिखित रूप से विभाजित कर सकते हैं ।

(1) उपन्यास
(2) कहानी
(3) संस्मरण - रेखाचित्र
(4) बाल साहित्य

शिवानीजी ने बड़े रोचक ढंग से विर्दिष्ट साहित्यिक रूपों में रचनाएं की है । इनकी रचनाओं के नाम और विशेषता हम आगे देखेंगे । गद्य साहित्य के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, आदि रूपों के मूल तत्वों को जान लेना अति उचित होगा ।

(1) <u>उपन्यास</u> :

उपन्यास सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्य-विधा है, अत: उसमें आभिजात्य का अभाव है, उसे बालक भी पढ़ते हैं अत: वह अप्रौढ और बचकाना है, स्त्रियों को वह प्रिय है, अत: वह स्त्रैण एवं तिरस्करणी है, उसे पढ़ने में अधिक मत्था पच्ची करने की आवश्यकता नहीं रहती है । उपन्यास का महत्त्व सिर्फ मनोरंजन की सामग्री उपस्थित करने तक ही सीमित नहीं है, इससे आगे वह ज्ञान का पोषक भीहै, एवं मनुष्य के सांस्कृतिक विकास का परिचायक भी है । "उपन्यास एक कलात्मक रचना है अत:

रागात्मकता ही उसकी आत्मा है, और इसके बिना कला का मूल्य सन्दिग्ध हो जाता है । उच्च कोटि के उपन्यासों में रागात्मक तत्व ही उनकी रोचकता और औत्सुक्य को स्थायी रूप देता है ।" 1

घर की चहार दीवारी के अन्दर का रुदन-हास्यमय सीमित पारिवारिक जीवन तत्कालीन और तद्देशीय परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए मनुष्य का सामाजिक जीवन, अतीत के अन्धकार में विलुप्त प्राय देशीय जीवन, विकारों के विचित्र संसार में जीने वाले मनुष्य का संघर्षमय आंतरिक जीवन, सबको उपन्यास में अंगीकार किया जा सकता है। अत: उपन्यास साहित्य अपने वैविध्य के कारण कितने विशाल क्षेत्र को अपना सकता है और मानव-जीवन के कितने विस्तृत अंश का स्पर्श कर सकता है । मनोरंजन के साथ-साथ वह ज्ञान भी प्रदान कर सकता है एवं दिशासूचन भी कर सकता है ।

हिन्दी उपन्यास का आविष्कार प्रेमचन्दजी के समय से माना जाता है । प्रेमचन्दजी के अलावा हिन्दी उपन्यास साहित्य को विकसित करने में अनेक प्रकार के साहित्यिक नवीन मानदण्डों और सिद्धांतों के साथ ही नये परिवेश से उत्पन्न मूल्यों का हाथ रहा है । इस युग के साहित्यकारों पर पाश्चात्य फ्रायड, युंग, एडलर आदि के मनोवैज्ञानिक, यथार्थवाद प्रतीकवाद, जड़चेतन वाद जैसी प्रवृतियों का प्रभाव भी पड़ा है । पाश्चात्य साहित्यकारों के प्रभाव से हिन्दी उपन्यासों में नवीन प्रयोगों का आविष्कार

1 - हिं उपन्यास सा० का अध्ययन - पृ० 29

हुआ । अतः विषय की दृष्टि से निम्नलिखित प्रकारों को जानना उचित रहेगा ।

§1§ मनोवैज्ञानिक उपन्यास : चिन्तन के क्षेत्र में विज्ञान के प्रवेश का अनिवार्य परिणाम है विश्लेषण की प्रवृत्ति । मनुष्य को समझने के लिए भी वैज्ञानिक प्रणाली का उपयोग किया गया है, और उसी का परिणाम है मनोविज्ञान । उपन्यास व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन का अध्ययन है । आधुनिक जीवन में जब प्रत्येक व्यक्ति को निरन्तर छोटे-बड़े मानसिक संघर्षों से होकर गुजरना पड़ता है, उसके वास्तविक स्वरूप के परिज्ञान के लिए मनोवैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है । जीवन प्रतिपल परिवर्तित होने वाला है, ऐसे जीवन के स्वरूप को और उस जीवन के मध्यमें विविध विकारों के आघातों को सहन करने वाली आन्तरिक चेतना को जानना ही मनोवैज्ञानिक उपन्यास का कार्य है । मनोवैज्ञानिक उपन्यास पात्रों की यौन प्रवृत्तियाँ, दमित वासनाओं, कामकुण्ठाओं एवम् मानसिक विकार आदि को स्पष्ट करता है जिसमें वैयक्तिकता का दर्शन होता है । उपन्यास की कथावस्तु मानसिक क्रियाओं पर आधारित होने के कारण उसका कथानक स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर अधिक निर्दिष्ट रहता है । प्रेमचन्द की आदर्शवाद परम्परा के पश्चात् जैनेन्द्र कुमार से लेकर अनेक उपन्यासकारों ने अपने पात्रों का मनोवैज्ञानिक बौद्धिक व तार्किक शैली पर आधारित चरित्रचित्रण का निरूपण किया । जिसमें जैनेन्द्रकुमार की §त्याग पत्र, कल्याणी, सुनीता§ भगवतीप्रसाद बाजपेयी की §मनुष्य और देवता§ अज्ञेय की §शेखर, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी§ इलाचन्द जोशी की §प्रेत और छाया, लज्जा§ शिवानी की §मायापुरी, किशनुली, गेंडा§ आदि रचनाएं द्रष्टव्य हैं ।

§2§ सामाजिक उपन्यास : सामाजिक उपन्यासों में आदि से अंत तक सामाजिक समस्याएँ छायी हुई होती है । प्रेमचन्द युग में भी अनेक लेखकों ने सामाजिक समस्याओं का चित्रांकन किया था । समस्या मूलक उपन्यासकारों ने बौद्धिक दृष्टिकोण के आधार पर समाज में उदभवित अनेक समस्याओं पर विचार किया है । तथोक्त समस्याओं का हल करने के लिए अपनी कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, वातावरण आदि की रचना भी करता है । आज के उपन्यास प्राय: इसी कोटि के हैं ।

पाश्चात्य विद्वानों ने सामाजिक उपन्यासों के अंतर्गत Problem Novel को समाविष्ट किया है । ( Joseph & shipley Dictionary of word Literuture P.286) सामाजिक उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में वैवाहिक समस्या. रूढिगत सामाजिक परंपरा, प्रेम के आदर्श, स्त्री-पुरुष के टूटते-बंधते संबंध तथा नारी जीवन और स्त्री समस्या के बारे में लिखा है । भगवती चरण वर्मा के भूले बिखरे चित्र, आखिरी दाँव, उपेन्द्रनाथ. अश्क के गिरती दिवारें, अमृतलाल नागर के बूँद और समुद्र आदि रचनाओं में सामाजिक समस्याएँ मुखरित हुई है । अन्य उपन्यास कारों में मोहन राकेश कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, तथा शिवानी ने भी अपनी रचनाओं के द्वारा सामाजिक समस्याओं का निर्दिष्ट किया है ।

§3§ समाजवादी उपन्यास : समाजवादी उपन्यास उस युग की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि सभी समस्याओं का निर्देशन करता है । जिसमें मार्क्सवादी विचारधारा अधिक रूप में

है । इस धारा के प्रमुख उपन्यासकार यशपाल [देशद्रोही, दादा कामरेड] नागार्जुन [रतिनाथ की चाची, नई पौध] अमृतराय [बीज, नागफनी का देश, हाथी के दांत] आदि ने अपने उपन्यासों द्वारा धार्मिक अंधविश्वास, सामाजिक विकृतियाँ, विषमता एवम् आर्थिक विसंगतियाँ पर कटु प्रहार किया है । बौद्धिक व साम्यवादी विचारधारा के द्वारा तथा कथित वर्ग में क्रांति एवम् प्रगतिवादी भावना उत्पन्न करके वर्ग चेतना या संघर्ष उत्पन्न करना इनका प्रमुख लक्ष्य है ।

[4] आंचलिक एवं प्रयोगवादी उपन्यास : इन उपन्यास का सूत्रपात्र स्वतंत्रता के पश्चात ही होता है ।[1] स्वतंत्रता पश्चात् के उपन्यासकारों ने नूत दृष्टि से सत्याग्रह के कारण शैली और शिल्प के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग किये हैं । इन उपन्यासकारों में धर्मवीर भारती का भी स्थान है । नाटकीय प्रयोग की दृष्टि से उनके दो महत्त्वपूर्ण उपन्यास है । गुनाहों का देवता और सूरज का सातवा घोड़ा । कथाप्रयोग की दृष्टि से सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का खोया हुआ जल, कथावस्तु या बहुदेशीय वस्तु की दृष्टि से नरेश महता का डूबते मस्तूल और वह पथ बंधु था तथा धूमकेतु: एक मूर्ति आदि उपन्यास उल्लेखनीय है । इसी प्रकार संयुक्त शैली के प्रयोग की दृष्टि से शिवानी का भी अग्रस्थान है । जिसमें चौदह फेरे, निर्मल वर्मा का [वे दिन] मार्कण्डेय [सेमल का फूल] अनंत गोपाल शेवड़े [मृगजल] आदि समाविष्ट हैं ।

1 - शंकरदेव अवतर हि॰सा॰ में काव्य रूपों के प्रयोगवादी उपन्यास पृ॰ 190 कथा सा॰ प्रयोग पृ॰ 184

अब हम शिवानी के उपन्यासों की चर्चा व वर्गीकरण पर दृष्टिपात करेंगे ।

[1] मायापुरी : [1957]

यह उपन्यास शिवानी का सबसे पहला उपन्यास है । इसकी कथावस्तु मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर आधारित है । विभिन्न परिवेशों में बाधा उत्पन्न करनेवाली एक अभागिनी स्त्री की कथा यहाँ पर चित्रित की गई है ।

इस कहानी का मुख्य पात्र शोभा को केन्द्र में रखकर मानसिक चेतनाओं का मनोविश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है । पारिवारिक समस्या होते हुए भी वैयक्तिकता की ओर प्रवाहित है । यही मनोवैज्ञानिक कथा की विशेषता है । यह एक नारी प्रधान उपन्यास है । विभिन्न स्वभावों वाली नारियों का भी यहाँ चित्रण देखने मिलता है । जैसे कि नारी एक त्याग की मूर्ति मानी जाती है । इस बात की सार्थकता शोभा के पात्र द्वारा होती है । स्वच्छंदी, अभिमानी, द्वेषी तथा विलासी स्त्री सविता है जो कथा का प्रवाह घुमाने में सहायक है । दुर्गा मौसी अपने सरल मृदु स्वभाव व पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है । रानी जी का भी मृदु तथा उपकारी स्वभाव है । गोदावरी स्वार्थी व कठोर स्त्री है जो अपने स्वार्थ के लिये अपने पुत्र की सारी खुशियाँ छीनकर उसका जीवन विषमय बनाती है । रुक्की भी एक कलह प्रिया स्त्री है जो अपने कलह के कारण सारे परिवार तथा मुहल्लेवाले आदि को तंग करती रहती है ।

कथा के अंतर्गत कई मार्मिक तथा भावात्मक प्रसंगों का वर्णन है जैसे गाँव छोड़ते वक्त छोटे मिटठू का "दीदी दीदी" कहकर रोते हुए

दौड़ना, उसकी मृत्यु के पश्चात् दीदी के लिये लिखे खत की काँजे से बँधी पुड़िया मिलना, माँ का पागलपन, रस्सी से खाट के साथ बाँधना - मृत्यु तथा गोदावरी को दिये वचन के खातिर शोभा का गृहत्याग आदि अनेक मार्मिक प्रसंगों का वर्णन, अधिक रोचकता तथा भावात्मकता उत्पन्न करते हैं। साथ साथ कथा रोमैंटिक होती रहती है। रोमान्स तथा सैक्स की ओर भी तनिक झुकाव लाने का प्रयत्न किया गया है। जैसे कि पीले बाबा का "राधा, राधा" कहकर किसी भी सुन्दरी के साथ कृष्णमय होकर नाचना तथा हाथ पकड़कर शारीरिक चेष्टाएँ करना। विराटपुर की रानी साहिबा का 18 वर्ष की आयु में विधवा होने से देवर के साथ रंगरेलियाँ उड़ाना। इसके अतिरिक्त सविता के भद्दे शरीर को रुचिकर बनाने सैक्स का सहारा भी लिया है। जैसे "जब सतीश विदेश गया था तब तो उसके बाल कटे नहीं थे पर आज . बाल और भी छोटे छोटे उपर उठा दिए गये थे। अंग प्रत्यंग के बढ़ते माँस को यथाशक्ति बंधन में ढालने का विफल प्रयत्न किया गया था - कसे ब्लाउज में कसकर।"[1]

शिवानी ने तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों को भी बतलाया है। विराटपुर की रानी, नेपाल की रानी साहिबा, राज्दूत आदि का वर्णन भी है। मामा केदार दत्त की दरिद्रता तिवारी जी का वैभवी व विलासी जीवन तथा सतीश के सामान्य जीवन के द्वारा आर्थिक असमानता की ओर अंगुली निर्देश किया है।

1 - मायापुरी - पृ - 30

सविता जैसी नारी का शिक्षा प्राप्ति द्वारा स्वच्छंद, स्वतंत्र, द्वेषी बन जाना तथा दिखावे के खातिर सतीश को पति मानकर अन्य के साथ स्वैर बिहार करना तथा शोभा का शिक्षा प्राप्ति द्वारा प्रेम, त्याग आदि से सम्मान व प्रेम हासिल करना ये शिक्षा प्राप्त नारी के नये रूप हैं । कथा में मानसिक चेतनाओं के होते हुए भी अनमेल विवाह के दुस्परिणाम की ओर संकेत करके वैयक्तिक गहनता के द्वारा ये कथा मनोवैज्ञानिकता की ओर अधिक सफल है ।

§2§ चौदह फेरे : §1965§

प्रस्तुत उपन्यास अपने ढंग का अनूठा और अद्वितीय उपन्यास है । संस्कारों के सन्दर्भ में कुमाऊँ अंचल के पुराने और नये समाज का घर्षण युगीन संक्रमण की पृष्ठभूमि में जीवन्त रूप से इस उपन्यास में चित्रित है । कथा प्रवाह सामाजिक समस्या को लेकर एक पारिवारिक जीवन की यथार्थता को छू लेता है । विविध प्राणवान चरित्रों, समाज, स्थान परिस्थितियों और बदलते हुए जीवन मूल्यों के बीच से नायिका "अहल्या" किस तरह अपना विकास करती है इसकी भावपूर्ण कथा बड़ी मार्मिकता से प्रस्तुत की गई है ।

"नन्दी कुमाऊँनी सुकन्या से कर्नल का ब्याह होता है । वह लज्जाशील,, संस्कारी एवम् पतिव्रता थी फिर भी पाश्चात्य शिक्षण से पले कर्नल की उपेक्षा पात्र बनती है । उपेक्षा का अन्य एक और कारण सामाजिक मान्यता थी "पुत्री जन्म" । कथा कलकत्ता के शहरी और कुमाऊँ के अंचल की है । यहाँ हम यह भी कह सकते हैं कि पाश्चात्य शिक्षण के कारण कर्नल ने अपनी प्राईवेट सैक्रेटरी के साथ घुलमिल कर नन्दी को त्याग दिया था । यहाँ पर नायिका का

संघर्षमय जीवन चित्रित है । अंत में सब कुछ सह कर नन्दी एक दिन महा वैष्णवी बन जाती है । "अहल्या" नन्दी की (सौत की) पुत्री होते हुए भी मल्लिका (प्राइवेट सेक्रेटरी) अपनी पुत्री-सा ही प्रेम करती थी यह एक सौत के मानस का दूसरा रूप चित्रित है । जज साहब की पत्नी का बनठन कर सती होना उस युग की सामाजिक धारा को पुष्टि देता है ।

इस उपन्यास में अन्य बातों का भी संकेत मिलता है जैसे, चीन-भारत युद्ध राजूदा के पात्र द्वारा, रेक्सी और अन्य मित्रों के परिवेशों का वर्णन, अंत समय में मल्लिका द्वारा लड़कियों के माध्यम से वेश्यागृह चलाना तथा पलकें और अंगुलियों का झड़कर कोढ़ी होना आदि ।

कथा प्रवाह में ललिता की उप कहानी जुड़ी हुई है । रामनाथन ललिता के पिता का मित्र उसे हिप्नाटीज्म द्वारा ब्याहने को तुला है । ललिता का सपने में देखना कि रामनाथन उसे पहाड़ से नदी में धकेल रहा है और वाकई रात को नींद में ललिता का स्वीमिंग पुल में आत्मघात करना एक नया रूप है । कथा में अन्य परिवेशों का विस्तृत वर्णन, ललिता की उपकहानी तथा साड़ियों व गहनों के लम्बे वर्णन आदि के द्वारा कथा प्रवाह शिथिल बन जाता है ।

अहल्या के नामकरण की सार्थकता तथा "चौदह फेरे" शीर्षक की सार्थकता के साथ "अहल्या" के पात्र द्वारा शिक्षा प्राप्त नारी का नये रूप में विकास देखने मिलता है । उपन्यास आंशिक सरितोपम की

ओर झुकता है क्योंकि पैतृक विचार का सामन्जस्य है तथा सामयिक परिस्थितियों के आधार पर नारी पात्र का परिवर्तन है फिर भी कथा भावगति को बनाये रखती है ।

§3§ कृष्ण कली : §1962§

प्रस्तुत उपन्यास बहुत पहले धारावाहिक रूप में धर्मयुग में छपा हुआ है । यहाँ लेखिका ने मध्यम वर्गीय परिवार एवम् वेश्याजीवन के परिवार की कथा निरूपित की है । कथा सामाजिकता की ओर से वैयक्तिकता की ओर बढ़ी हुई है तथा जीवन की यथार्थता का दर्शन ज्ञात कराती है । समाज के अन्तर्गत पुत्र, पुत्री, ननद-बहू, भाई भाभी, सास आदि के संबंधों के बीच घटती अनेक समस्याओं की कथा भी बिनी हुई है ।

डा॰ पेट्रिक कुष्ठरोगियों की डाक्टर है । मरीज पार्वती और असदुल्ला की अवैध संतान को बचाकर वेश्या पन्ना को सौंपती है । वही उपन्यास नायिका कृष्णकली है । अंत में वह सत्य जानकर विद्रोहिणी बन जाती । घर से भागकर स्मगलींग, चरस गाँजे की आदी जैसे अनेक अपकार्यों में सम्मिलित होती है । अनेक परिवेशों से गुजरती वह "स्लीपींग पिल्स" लेकर अपना जीवन समाप्त करती है । कथा के अंतर्गत तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को निरूपित की है । पाखण्डी साधु के द्वारा रेवतीशंकर तिवारी की युवान पुत्रवधू को दीक्षा के बहाने भगा कर ले जाना, पाकिस्तान युद्ध का संकेत तथा क्रिश्चियन धर्म की महत्ता का ज्ञात होता है । बंगाली, क्रिश्चियन आदि परिवेशों का वर्णन भी है । माघ के मेले में त्रिवेणी में हिन्दुओं के साथ क्रिश्चियन परिवार का नहान करना, चंदन लगाना आदि राष्ट्रीय एकता का

प्रमाण है । यद्यपि हिन्दू धर्म के कुल गोत्र आदि की टिप्पण करते हुए कहा है कि, "क्या कह कर छोड़ेगा यह जल । न कली का कुल था न गोत्र, हिन्दूशास्त्र तो उस पर जाने वाले यात्री से भी कुल गोत्र का वीसा माँगता है ।" 1

सुधारवादी विचारधारा वाणी के द्वारा ज्ञात होती है । वाणी अपना वेश्याजीवन छोड़कर दिल्ली में योग का क्लिनीक शुरु करती है, माणिक अपना पेशा और कोठी छोड़कर पाकिस्तानी मित्र से निकाह पढ लेती ये सुधारवादी संकेत है ।

इस प्रकार कृष्ण कली एक मौलिक नारी प्रधान कथा है । हिन्दी साहित्य में "कुष्ठरोग" की समस्या और इतना विस्तृत मानवीय संवेदना से पूर्ण यह पहला ही उपन्यास है । कथा मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मान्यताओं का अतिक्रमण करती हुई नितान्त मानवता की कथा हो गई है । मैक्सिम गोर्की ने कहा है "मानव चेतना के विकास तथा मानव की सहानुभूति विस्तार को ही साहित्य का सर्वोपरि गुण मानना चाहिए ।" 2

1 - कृष्णकली पृ - 228

2 - लिटरेचर पृ-91

"कृष्णकली" असामान्य चरित्र की क्यों बन गई ? गांजा, चरस का दम लगाना, स्मगलींग आदि उसे क्यों अपनाना पड़ा ? वह क्या चाहती थी ? वह चाहती थी जीवन का प्रेम, माँ बाप का दुलार समाज में मान-सम्मान किंतु उसे मिली केवल घृणा और उपेक्षा, क्योंकि वह कोढ़ी माँ बाप की अवैध सन्तान थी इसलिए ?

संक्षेप में इस उपन्यास में नवीन मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का नया अभिगम है । मानव आखिर मानव है ।

﴾4﴿ भैरवी : ﴾1969﴿

"हिन्दुस्तान साप्ताहिक" में धारावाहिक रूप में इस उपन्यास ने सभी का मन जीत लिया है । यह एक अधिक रोमांचकारी, हृदयस्पर्शी और नारी प्रधान उपन्यास है । 'प्लाट' का गठन चरित्र-चित्रण, पहाड़ों का रंगीन और भोला वातावरण, रोचक शैली, सरल भाषा और सहज अभिव्यक्ति से एकदम अनूठा है । भैरवी का कथानक एक अविच्छिन्न धारा के अन्तर्गत दूसरी उपकथाओं को भी प्रांजल रूप प्रदान करता चलता है । उपन्यास की वस्तु किसी विशेष समस्या या वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करती है अपितु "भैरवी" तथा "मायादीदी" के पात्र के द्वारा यह सिद्ध करती है कि मनुष्य विधि के हाथों का खिलौना मात्र है ।

कथा में युगीन तत्कालीन अघोर पंथी साधुओं का चित्रण मिलता है । ऊँचे लम्बे तगड़े, लोहे से तप्त शरीरवाले स्मशान में

बैठकर मुर्दों को साधने वाले साधु का चरित्र प्रस्तुत है । इन योगियों का खोखलापन "मायादीदी" तथा "भैरवी" के प्रति आसक्ति के द्वारा प्रतीत होता है । तीन-तीन चार-चार दिनों तक चीलम के नशे में धूर्त रहकर तथा स्मशानों के बीच रातदिन धूनी जलाकर बैठने वाले और मुर्दों को साधने वाले अघोरी बाबा क्या वास्तव में अपने आपको, अपनी वासनाओं को जीत पाये हैं ? कभी नहीं । दक्षिण से आये शिवशंकर स्वामीनाथन याने स्वामी भैरवानंद नाथ-पंथी अघोरी बाबा थे । माया दीदी बाल विधवा और वल्लभी अखाड़े की वैष्णवी, माघ के मेले में दोनों मिले और इस महास्मशान में मूंड साध रहे थे । वही बाल विधवा अब भैरवानंद की पार्वती थी। "भैरवी" का मूल नाम चन्दन था किंतु विक्रम के साथ हनीमुन जाते समय गुण्डों के भय से वह चलती हुई गाड़ी से महास्मशान के पास कूद पड़ी थी । यहाँ ही समाधिस्थ भैरवानंद अघोरी बाबा ने साधना में बैठे थे और अपनी गुफा में ले जाकर "भैरवी" नाम दिया ।

माया दीदी के मृत्यु के पश्चात् बाबा की वासना को भांप कर वह पिछली खिड़की से भाग निकलती है । विष्णुप्रिया की सहायता से वह अपने पति विक्रम के घर आती है किंतु उसी वक्त विक्रम की दूसरी पत्नी जया ने पुत्र को जन्म दिया था । अत: वह वहाँ से चल दी... कहाँ ? क्या पता........ ।

इस तरह मनुष्य विधि के हाथों का खिलौना है यह "भैरवी" से स्पष्ट होता है । कथा प्रवाह सांस्कृतिक धारा को स्पष्ट करता हुआ बहता है ।

"भैरवी" के बारे में शिवानीजी ने लिखा है - "भैरवी की प्रेरणा मुझे बहुत कुछ अंशों में कुमायू से ही मिली है । वैसे वहाँ धर्म व्यवस्था की दृष्टि से हिन्दू धर्म ही प्रमुख है । बौद्ध धर्म आठवीं शताब्दी तक रहा । इस धर्म के कुछ कुछ अनुयायी आज भी कुमांचल के उत्तरी भाग जोहार-दारमा में मिलते हैं । "गणनाथ" "पीनाथ" आदि नामोंसे स्पष्ट है कि कुमायू नाथों की तपस्या भूमि भी रही है । कनफटे जोगी, नाथ संप्रदाय की परंपरा का आज भी प्रतिनिधित्व करते हैं । शिवोपासना के कारण यहीं भूतप्रेत जादू टोने आदि का भीप्रचलन है । कुमायू गजेटियर में भी "विच क्रैफ्ट इन कुमायू" पर एक अत्यन्त रोचक प्रकरण है । "ग्वाल्ल", "ऐंडी" "कलविष्ट", "चौमू" ग्वालादेव आदि स्थानीय देवताओं की कचहरी में कब किसके पुरश्चरण की अपील की थी और कैसा तत्काल न्याय हुआ था ।..... शायद भैरवी में भी वही स्मृति उभर उठी है।"[1]

§5§ श्मशान चम्पा : §1972§

प्रस्तुत उपन्यास का कथासूत्र एक सामाजिक अंचल को लेकर चलता है । यहाँ एक आत्मरूढ युवती की कथा है जिसे जीवन के हर मोड़ पर अच्छे कर्मों और निष्ठा के बावजूद भी अनेक परिवेशों द्वारा यातना भुगतनी पड़ती है । अनेक घटनाओं के अंतर्गत निर्दोष होते हुए भी दोषित एवं कलंकित समझी जाती है । यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है । चम्पा के सजीव चित्रांकन के बावजूद घटनाओं का संयोजन बड़ा अद्भुत और विचित्र है । इन विचित्रताओं से ही उपन्यास एकसंवेदनशील एवं गहरी वेदनाओं से भरा हुआ है ।

1 - मेरी प्रिय कहानियाँ - पृ - 9

पिता के कलंक, बहन का मुस्लिम युवक से भागना, तथा अपनी सगाई छूट जाने पर एकान्त स्थल पर चली जाती है । ये सारी घटनाएं जिनके लिये वह कतई जिम्मेदार नहीं है फिर भी उसके साथ दुर्भाग्य की तरह जुड़ जाती है ।

वहाँ भी विचित्र घटना घटती है । उसकी बहन जूही जिसे अपने पति से संतोष नहीं था फिर भी अन्य पुरुष के साथ संबंध की अनुमति थी वह अपना पाप धुलवाने डाक्टरनी चम्पा के पास आती है । चम्पा उसे पहचानकर भाग निकलती है । अंत में अपने सौभाग्य को ठोकर मारकर वहीं लौट आती है । घटना संयोग के कारण उसे सेनगुप्त की सारी सम्पति मिल जाती है लेकिन उसके लिए दु:खद सिद्ध होती है । अंत में उसे वेनाराम की अधम दासी बनने से ही छुटकारा नहीं मिलता अपितु "वेश्या की दत्तक पुत्री" का खिताब भी मिल जाता है । अत:_ यह एक ऐसी विचित्र युवती है जिसका अपना ही संसार है, अपना जीवन और "अपना ही यथार्थ। सांसारिक सुख ऐश्वर्य की आकांक्षा होते हुए भी वह अनिश्चित काल के लिये प्रतीक्षा करती रहती है ।

इस उपन्यास में कोई उद्देश्य या समस्या लक्षित नहीं है । यहाँ शिवानी ने दो पीढ़ियों का संघर्ष बतलाया है । आधुनिक और पहाड़ी समाज के बीच चम्पा के व्यक्तित्व का पराक्रम करुणाजनक है, संवेदना जगाता है और जिन परिस्थितियों के कारण ऐसा हुआ उसके लिये सोचने पर बाध्य करता है । सौन्दर्य और शालीनता के अभिमानमें दुनिया को तुच्छ समझने वाली इस अतिशय संवेदनशील युवती चम्पा का मार्मिक चरित्र चित्रण यहाँ प्रस्तुत है । वह अंत में

श्मशान चम्पा नाम से अभिशप्त हो जाती है । इसके लिये यह सार्थक हो जाता है -

"चम्पा तुझमें तीन गुण रूप, रंग अरु बास,
एक अवगुण है तेरो भंवर न आये पास ।"

(6) कैंजा : (1975)

प्रस्तुत उपन्यास मनोवैज्ञानिक चेतना को स्पष्ट करता है । कथा कुमराऊ प्रान्त के परिवेश को लेकर बढ़ती है । नन्दी वैधव्य योग के कारण कुशल डाक्टरनी बनकर स्वावलम्बी बनती है । यहाँ पर सुन्दरता पर आसक्त प्रेमी और सदा से हृदय में प्रेम रखकर भी मूक मौन रहने वाली प्रेमिका का रोचक चरित्र प्रस्तुत है । "कैंजा" अर्थात् सौतेली माँ का भार वहन कर अनाचारी और रुग्ण प्रेमी से स्वेच्छा से विवाह रचाकर एक आधुनिक डाक्टर युवति की मनोदशा किस स्थिति में परिणत होती है । इसका चित्रण यहाँ चित्रित हुआ है ।

दूसरी ओर सुरेश नन्दी की ओर से स्वीकारात्मक संकेत न पाकर मानसिक सन्तुलन खो बैठता है और भयानक "सैक्स मैनियाक" बनकर जघन्य अपराधों में प्रवृत होता है । उसका मानसिक अंतर्द्वन्द्व भी प्रस्तुत है । वह अंत में मानिहारिन की पगली अबालिग लड़की को गर्भवती बनाकर भाग जाता है । नन्दी पगली के पुत्र को स्वीकार करती है । अंत में नन्दी अपनी अतृप्त आकांक्षाओं, मानसिक अभाव एवम् रोहित का अपने पिता के अभाव की पूर्ति के लिए रुग्ण एवं मरणासन्न सुरेश से विवाह कर कैंजा - विमाता का भार वहन करती है । यहाँ पर रोहित, नन्दी एवम् पगली की मानसिक परिस्थितियाँ

का वर्णन भी चित्रित है ।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत उपन्यास में सगे सम्बन्धियों की खोखली सहानुभूति, स्त्री शिक्षण की महत्ता, दिगम्बर साधुओं का संकेत तथा "रामलीला" द्वारा लोगों का मनोरंजन आदि ज्ञात होता है । ग्राम्यजीवन के प्रेम की झांकी मनिहारिन पगली लड़की के पुत्र के जन्मोत्सव और आनन्द द्वारा दृश्यमान होती है ।

कहानी में स्त्री का दूसरा रूप देखने मिलता है जैसे कि नन्दी अपने प्रेमी की संतान की कैंजा नहीं अपितु विमाता बनती है "सौत" की संतान अपनी ही समझती है ।

कथा प्रवाह मानसिक प्रतिक्रियाओं पर आगे बढ़ता है किन्तु रोमेन्टिक व सेक्स की ओर भी अल्प संकेत करता है जैसे कि "एक दिन पगली ने अपनी मैली बास्कट के बटन तड़ातड़ तोड़ उसे दूर फेंक दिया तो नंदी ने उसकी फिरंगी मेम की सी सफेद चमड़ी के बीच यौवन के स्पष्ट हस्ताक्षर देख लजाकर आँखे फेर ली थी ।" [1]

शिवानी ने बाल मानस की सहज वृत्तियों को भी अछूता नहीं छोड़ा है । कैंजा कहने पर रोहित की मानसिक क्रुद्धता और शीशा ताड़न की प्रतिक्रिया का वर्णन भी बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है । इस प्रकार उपन्यास मानसिक चेतना को लेकर ही प्रस्तुत है । यद्यपि सुरेश की मृत्यु के समय पर कई साल से अदृश्य मालदारिन का अचानक आना एक चमत्कारिकता सा खटकता है ।

1- कैंजा - पृ॰ 35

संक्षिप में "वैजा" एक नारी प्रधान और मानसिक चेतना को प्रस्तुत करता हुआ उपन्यास है ।

§7§ विषकन्या : §1977§

प्रस्तुत उपन्यास रोचक व नारीप्रधान है । इसमेंउस पात्र की ओर लेखिका की संवेदना केन्द्रीभूत है जो अपने चरित्र में अद्भूत है तथा अपने ही प्रति कई प्रकार के अन्धविश्वास पाले हुए है और संसार से अभिशाप्त होकर मुँह छुपाये फिरती है । विषकन्या की नायिका के रूप में शिवानी एक अपूर्व चरित्र की सृष्टि की है जो उनकी गहरी मानवीयता और संवेदनशीलता की प्रतिक है ।

दामिनी और कामिनी दो जुड़वा हमशक्ल होने के कारण भ्रांति उत्पन्न करती है । कामिनी का चरित्र ऐसा अभिशाप्त है जो हमें आश्चर्य पैदा करता है । उसे जो चीज़ पसंद हो उसका फौरन नाश हो जाता है । उसका वह विष अपने प्रेमी, पायलोट, फिल्म एक्ट्रेस आदि को भी डँस लेता है । कहानी "विष" रूपी एक ही अँचल को लेकर चली है अत: आँचलिक कही जा सकती है । कहानी आधुनिक होने के कारण पायलाट डिसूज़ा की माँ इतालवी और पिता गोवानी होना आंतरजातिय विवाह की ओर संकेत है तथा कामिनी का स्वतंत्रता व स्वच्छंदता से विमान परिचारिका के रूप में विहार करना चित्रित है ।

क्वचित प्रेमी और बड़ी बहन के पति के साथ घटित घटनाओं द्वारा रोमैंटिकता प्रदर्शित है । इस प्रकार कामिनी का चरित्र वास्तविक है इसकी अनुभूति लेखिका ने अपनी कुशल शैली से मुखरित किया है ।

§8§ माणिक : §1977§

यह एक नवीनतम मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । इसमें एक आधुनिक ठग युवती के अपूर्व कौशल की रोमांचक - रोचक कथा है । एक अविवाहित बड़ी बहन के त्याग तपस्या और फिर बाद में उभर आने वाली यौन-कुंठा की अद्भुत कहानी है ।

कथा प्रवाह वैयक्तिकता से रोमैंटिकता की ओर बढ़ती है । शहर से दूर रहनेवाली नीलम की ढलती उम्र में दमित इच्छाएँ और स्वच्छन्द यौन वासनाएँ जागृत होउ उठती है । दीना स्वच्छन्द यौवना उसे स्नेह जता कर दम्पति सा व्यवहार करती है । अंत में वह सब कुछ ठग कर नीलम, और उसकी नौकरानी की हत्या करके चम्पत हो जाती है ।

इस कहानी में "नीलम" के पात्र द्वारा समाज में बड़ी बहिन की पारिवारिक फर्ज और संयम तथा अनुशासित जीवन का परिचय दिया है । साथ साथ लेखिका ने "दीना बाटली-वाला" के चरित्र द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि चतुर ठग वही है जो चाहे कैसे भी कठोर, अनुशासित तथा संयमित व्यक्ति को भी परास्त कर देता है ।

कहानी का मूल उद्देश्य यही है कि संयम के नाम पर दबायी जाती यौवन-भावना से बचना आसान नहीं है, वह कभी भी उभर सकती है, वास्तव में खोखलापन है । इस प्रकार यह एक वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक चेतना प्रस्तुत करती कथा है । यहाँ चारों नारी पात्रों की अपनी अपनी विशिष्टता है । जैसे कि - नीलम संयमी, अनुशासन में कठोर तथा वात्सल्य मूर्ति, दीना बाटलीवाला स्वच्छन्द ठगिनी तथा कुशल हत्यारिन, लक्ष्मी समझदार किंतु मूक प्रेक्षक और रंभा युवानी की स्वच्छन्द विहार के पश्चात्य स्थिर गृहिणी । कथा के केन्द्र स्थान पर नीलम है जो वैयक्तिकता स्पष्ट करती है ।

§9§ रतिविलाप : §1977§

यह उपन्यास भी एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । उनके पात्र सहज और सरल होते हुए भी अपने आंतरिक चरित्र से चौंका देने वाले हैं । इस उपन्यास में नियति के चक्र में फँसी एक नारी ने जीवन के उतार चढ़ावों का मार्मिक चित्रण किया है । यहाँ पर नायिका के संघर्षमय जीवन को उद्‌धृत किया है । अनसूया का विवाह पागल विक्रम कापड़िया से उसके मामा ने छल से किया था । एक दिन उन्मादावस्था में उसे गोद में लेकर छत से कूद रहा था किंतु श्वसुर ने उसे बचाया पर पति की मृत्यु हुई । घरबार बेचकर अनसूया को लेकर बम्बई में साड़ियों का व्यापार करते हैं । "हीरा" नामक 14 वर्षीय पतिहंता को नौकरानी के रूप में रखते हैं । एक दिन अनसूया की अनुपस्थिति में श्वसुर उसे लेकर भाग जाते हैं। वहाँ हीरा द्वारा हत्या होती है । बहुत दिनों के बाद दस्यू पकड़ा जाता है पर ऐसे मोड़ पर कि अनसूया को तरस आती है । हीरा का गोरा पुत्र श्वसुर की निशानी था ।

इस प्रकार विवाह और वैधव्य का अभिशाप सहती नारी की दर्दभरी कहानी है । साथ ही एक बुजुर्ग विवेकशील सत्पुरुष को भी नारी देहाकर्षण द्वारा पथभ्रष्ट व विचलित कर देती है इसका चित्रण प्रस्तुत है । कहानी मनोवैज्ञानिक से वैयक्तिकता की ओर बढ़ती हुई जीवन की यथार्थता प्रकट करती है । उम्रभर वैधव्य सहकर संयमित जीवन जीना उच्च संस्कारों की देन है ।

कहानी यथार्थ होते हुए भी "अपराध" को लक्ष्य में लेकर लिखी गयी कहानी कह सकते हैं क्योंकि अनसूया भी एक अन्यरूप से पतिहंता थी, हीरा ने दो हत्याएँ की, हीरा की सहचरी चाटवाले भैया की बहन ने भी पति को विषपान से मारा था । "खोल दो मुझे, जाने दो मुझे, कहाँ गई वह अरे, कहाँ छिपा दिया मेरी सुन्दरी बहू को मैंने तो उसका अँगूठा पकड़ा है पापा, मैं क्या उसे भगाकर लाया हूँ?"[1] पागल विक्रम की की उक्त पंक्तियाँ मानसिक चेतना को उद्धृत करती है । कहानी के अन्तर्गत दो-तीन जगह पर वृद्ध एवम् पागल पति से विवाह करवाना दर्शित है जो तत्कालिन परिस्थिति को ज्ञात करता है । कहानी मार्मिक मनः स्थिति का वर्णन करती हुई आगे बढ़ती है ।

"अनु बेटी, गुजराती की कहावत सुनी है तूने? सूरत नुँ जमण ने काशी नुं मरण" सौभाग्य बिरले ही को मिलता है ।"[2] यथार्थता की यह पंक्तियाँ के इस कहावत को ध्यान में रखकर ही पात्र की रचना तथा उसके जन्म व मृत्यु के स्थलों का उल्लेख किया है।

1 - रतिविलाप - पृ. 12

2 - रतिविलाप - पृ. 36

अंत में कहानी में मनोवैज्ञानिकता के साथ करशन्दास कापड़िया आदि के चरित्रों के द्वारा सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विघटन को सूचित करते हैं ।

§10§ रथ्या : §1977§

प्रस्तुत उपन्यास में शिवानी ने कथानक के दो विरोधी बिंदु यथार्थवाद और आदर्शवाद के मिश्रण से उपन्यास को अधिक रसप्रदता प्रदान की है । रथ्या यानी वेश्याओं के मुहल्ले तक जाने वाली पतली सड़क । वसंती के घर तक जाने वाली सड़क को "रथ्या" नाम दिया था विमलानन्द ने । यह तब की बात है जब उसे लगा कि इसी छोकरी के लिए वह क्षण भर पूर्व धरती सी सहिष्णु पत्नी और अबोध पुत्रों की निरीह गर्दनों पर स्वयं छुरी रखने को तत्पर था ।

यह एक नारी प्रधान मनोवैज्ञानिक कथा है । जो सामाजिक धरातल से उठती है । वसंती को गाँव से क्यों भागना पड़ा ? सर्कस के मेनेजर मद्रासी बाबू को घर से तथा मेली मेकेंजी के घर से भी पलायन क्यों होना पड़ा ? जिसके लिए यथार्थ कारणों का योग है । वह एक ग्रामीण नटखट बाला थी समय के चक्र ने जिसे नर्तकी बना दिया । बड़े वैभव की जिंदगी जीने लगी पर उसके भीतर का खालीपन कभी नहीं भरा । कहानी रोमेन्टिक है एक आदर्श शिक्षक भी अपनी प्रेमिका का व्यवसाय जानते हुए तथा गृहस्थी होने के बावजूद भी प्रेमिका के मोह बंधन में कई दिन-रात तक जकड़ा रहता है । अंत में उसका आदर्शवाद जाग उठता है किंतु स्वाभिमानी प्रेमिका भी अपना यथार्थपूर्ण व्यंग बाण चलाती है - छिपकर जूठन खाना सहज है छोटे वैद, भाई-बिरादरी के सामने जूठी-पत्तल में खा पाओगे बोलो ?" ।

1 - रथ्या - पृ. 85

इस प्रकार आदर्श और यथार्थ का द्वन्द्व पाठकों को अपनी ओर खींच रखता है । आदर्शवादी विमल और यथार्थोन्मुखी बसन्ती कथानक के दो विरोधी बिन्दु हैं जो कथावस्तु को प्रभावशाली बनाते हैं ।

§11§ किश्नुली : §1979§

अभिनव कथा-शिल्पी शिवानी का यह उपन्यास एक विशिष्ट चरित्र की कहानी है । किशोरवय की उन्मादिनी किशनुली के जीवन को जिस मार्मिकता से प्रस्तुत किया है वह अतुलनीय है । उन्माद के अन्दर भी प्रेम और आकर्षण का बीज छीपा है । "सेक्स" प्रत्येक जीवों का एक अभिन्न अंग है चाहे पशु हो, पागल हो या कोई भी सदाचारी जीव हो इसके भीतर यह छीपा हुआ ही है । किश्नुली के जीवन में आए इस परिवर्तन को लेखिका ने गहराई से उभारा है । इस कारण किश्नुली का चरित्र शिवानी के अन्य नारी पात्रों से विशिष्ट है ।

शास्त्रीजी संस्कृत के पण्डित सदाचारी और बडे धर्मचुस्त है । पण्डिताईन भी पतिव्रता वात्सल्यमयी और निःसंतान है । गांव में आयी हुई और "हडि हडि" हुई पगली को पुत्री की तरह रखती है । एक दिन "किसना" घर छोड़ चली जाती है, जब सात महिनों के बाद लोटती है तो पाप के कारण शारीरिक परिवर्तन से गांव वाले शास्त्रीजी के घर को बहिष्कृत करते हैं । किश्नुली की संतान का नाम "करण" रखते हैं । पण्डित श्रीहिन होने के कारण घर छोड़ चले जाते हैं और पत्र के द्वारा लिख

भेजते हैं विशनुली की संतान दाँट [अवैध] नहीं है किंतु मेरा ही पाप है ।

इस प्रकार बड़ी मार्मिकता से लेखिका ने प्रस्तुत किया है । कहानी मनोवैज्ञानिक होते हुए भी एक ही अंचल पर चलती हुई आंचलिक कही जा सकती है । रोमेन्टिक व सैक्स की और अल्प संकेत दृश्यमान है ।

कुमाऊ की सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं का भी चित्रण यहाँ चित्रित किया गया है । जैसे कि "नवजात शिशु के अधरों पर कटी नाल के ताजे रक्त प्रलेपन का पहाड़ी टोटका मैं पहले भी सुन चुकी हूँ । लड़कों की नाल कचहरी में गाड़ी जाती है जिससे वह डिप्टी बने और लड़की की चूल्हे के नीचे, जिससे वह दक्ष गृहिणी बने ।"[1] ।

गाँव के लोग कितने भोले होते हैं, कैसे कैसे लोग उन्हें ठगते हैं इसका भी चित्रण प्रस्तुत किया गया है । कुल गोत्र, ब्राह्मण का उज्जवल रंग, भैरवनाथ आदि का उचंण [मनौती] मृगचर्म की महिमा आदि के बारे में भी अनेक लोकोक्तियाँ हैं ।

"बाँजे की लाकड़ि टेढी भली रयूंणी की बाना सेणी भली" अर्थात् बाँज की लकड़ी टेढी भी हो तब भी भली है क्योंकि दप से सुलग जाती है और रयूंण गाँव की लड़कियाँ भैंगी हो तब भी अपरूप सुन्दरी होतीहैं ।[2]

1 - विशनुली - पृ० 15
2 - विशनुली - पृ० 19

किशनुली जब कई महिनों तक वापस नहीं लौटती है तब पण्डिताईन कहती है - "वह देख जगमगाते "टवाले" देख रही है ना ?" कहते हैं कुँवारी लड़कियाँ ही मरने पर टवाल बनकर रात रात भर ऐसे पहाड़ों पर घूमती है ।[1]

इस प्रकार सभी प्रकार से किशनुली एक अप्रतीम मनोवैज्ञानिक लोकप्रिय कहानी है ।

{12} सुरंगमा : {1979}

प्रस्तुत उपन्यास, एक नारी प्रधान सामाजिक उपन्यास है । जिसमें बड़ी मनोवैज्ञानिक ढंग से स्त्री चरित्रों के मानसिक तनाव को अभिव्यक्त किया गया है । उपन्यास में दो कथाएँ साथ साथ जूड़ी हुई है ।

नाबालिग लक्ष्मी भागकर संगीत मास्टर गजानंद से शादी करती है । वह शराबी उसे धोखा देता है वहाँ से वह भाग निकलती है तब उसकी संतान अवैध न समझी जाये जिससे रोबर्ट से शादी का समझौता करती है । वहीं संतान सुरंगमा, जो माँ की तरह ही सभी दुःख झेलती है और आजीवन कुँवारी रहने का संकल्प करती है किंतु शिष्या मीरा के पिता मंत्री दीनकर से प्रेम करती है । किंतु परिणाम शून्य ही रहता है ।

कथा प्रवाह में कभी कभी रूकावट आती है क्योंकि सभी पात्रों के अतीत की स्मृतियाँ, उनके पूर्वजीवन तथा अनावश्यक प्रसंगों की चर्चा और संगीत का गहराई से किया गया चिंतन-वर्णन प्रस्तुत है । इससे कथा प्रवाह बोझिल हो उठता है । सुरंगमा, गजानन्द,

1 - वही पृ० - 25

गोहरजान, दीनकर, वेरोनिका, लक्ष्मी तथा विनिता आदि पात्रों के पूर्वजीवन अतीत के प्रसंग आदि चित्रित है ।

कहानी इस उपन्यास को प्रतिरोपम की ओर खींच ले जाती है । सुरंगमा, लक्ष्मी आदि की पैतृकता का संकेत, जीवन प्रसंग एवम् रोगों का साम्य तथा सामयिक परिस्थितियों में क्वचित परिवर्तन इसकी सिद्धता है । नेताओं का खोखलापन तथा बड़े बनने से मातृभूमि से दृष्टि फेर लेना, पारिवारिक समस्याएँ आदि यहाँ अंकित है । स्त्री की मर्यादा, राजनीति से रुचि के कारण समाज सेविका बनकर महिनों भर घर से बहार रहने के कारण गृहस्थी की पायमाली आदि भी रहस्योद्घाटित होता है । इस यथार्थवादी उपन्यास में पात्रों का, समाज का, राजनीति का यथार्थ चित्रण हुआ है । समाज की कुप्रथा- अवैधसंतान को न स्वीकारने की विडम्बना भी देखने मिलती है । साथ साथ इसमें हिन्दू धर्म की अपेक्षा इसाई धर्म के विशिष्ट गुण और सहिष्णुता का विशेषआलेखन किया गया है । हिन्दू नारी का अवैध संतान के पिता की पूर्ति के लिये समझौता के रूप में ब्याह करके अपने जीवन का महान त्याग एक विशिष्टता योग प्रदान करता है ।

वेश्याओं के कोठे पर भी चलती प्रतिस्पर्धाएँ द्वेष, आदि पान के बीड़े में अफीम व पारे को पिलाकर की हुई हत्या से ज्ञात होता है । वहाँ तोते को भी रामनाम के बदले अशिष्ट गालियाँ रटाई जाती है ।

संक्षेप में सुरंगमा की मनोव्यथा अवर्णनीय है । समाज के ऐसे परिवेश में विभिन्न प्रतिवेशियों के बीच यथार्थता की डोरी पर चलती सुरंगमा है ।

॥ 13 ॥ कृष्णवेणी : ॥ 1981 ॥

कृष्णवेणी भी एक मौलिक नवीन मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । यहाँ पर लेखिका ने परलोक की आत्माओं का पृथ्वी लोक के मानवीओं के साथ मिलन की कल्पना की है । वैसे परलोक के आत्माओं के बारे में लेखिका पुष्टि भी करती है । "कृष्णवेणी" एक ऐसा ही पात्र है जिसके माध्यम से लेखिका यह सिद्ध करवाना चाहती है । सिर्फ आठ वर्ष की उम्र से ही भविष्य जानने की अदभुत शक्ति से सभी का प्रियभाजन बनती है । "ब्लैक प्रीन्स" की जीत, मामा का पागलपन, प्रेमी भास्करन का कोढ़ी बनना आदि अनेक संकेत उसी ने ही अपनी दैवी शक्ति से दिये थे ।

इस कहानी में एक सामाजिक विचित्र रिवाज की भी पुष्टि की है कि रिवाज के अनुसार लड़की का ब्याह मामा के साथ हो । पाखण्डी भविष्यवेता के बारे में भी निजी उदाहरण दिया है कि जिसकी रूम में से शराब की बोतलें निकाली गई उस पाखण्डी ने शिवानी का अपना भविष्य दिखाने अपने कमरे में बुलाया था पर कृष्णवेणी द्वारा ही वे बच पायी । शिवानी ने अपनी अनुपम बेजोड़ और रोचक लेखनी को भी कृष्णवेणी की देन मानी है । तभी तो वह कहती है - "वस्त्र चयन में ही नहीं पुस्तक चयन में भी उनकी रूचि बेजोड़ थी । आज जब मेरी लेखनी अविराम गति से सब लिखती है तो मैं उसका असीम कृतज्ञता पूर्वक स्मरण कर रही हूँ । जिसने ही इस लेखनी को इतनी सहज गति दी है, उसने ही मुझ अंगुली पकड़कर साहित्य के सुरम्य नन्दन कानन में पहुँचाया था, यह थी कृष्ण वेणी ।" 1

1 - कृष्णवेणी - पृ. 23

कथा प्रवाह सिर्फ एक ही चेतना को स्पष्ट करता है - भविष्य कथन और परलोक की आत्मा । कृष्णवेणी द्वारा की गई सभी घोषणाएँ सत्य थी किंतु अचानक समुद्रतट पर पीली साड़ी पहनकर मिली हुई क्या कृष्णवेणी की परलौकिक आत्मा थी?

कहानी कृष्णवेणी को केन्द्र में रखकर चलती हुई वैयक्तिकता की ओर बढ़ती हुई आंचलिक मनोवैज्ञानिक कहानी है । लेखिका की अनेक कहानियों में कुष्ठरोग पर निर्देश मिलता है, यहाँ पर भी यही चित्रित है ।

§14§ गेंडा : §1981§

"गेंडा" उपन्यास एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । दो अभिमानी सहेलियों के परिवार के बीच की आत्मीयता और दरार तथा विनाश का आलेखन यहाँ प्रस्तुत है । सुपर्णा और राजमेहरा दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं । राज स्वच्छंदी और स्वतंत्र है, सुपर्णा के परिवार को मोहपाश में लेकर सुपर्णा के पति को वश कर लेती है । उनके अनैतिक संबंधों से तंग आकर सुपर्णा जादू-टोना से छुटकारा पाती है इसका दुस्परिणाम यह आया कि राज की मृत्यु हुई तथा अपने पति की आत्मीयता में दरार पड गई । "गेंडा" राज के बदसूरत पति का नाम है ।

यह एक नवीनतम उपन्यास है । कहा जाता है कि नारी किसी भी कीमत पर अपनी सौत को पसन्द नहीं करती है इसी बात की प्रस्तुति यहाँ हुई है । आलोच्य रचना के आधार पर यह निश्चित कह सकते हैं कि शिवानी में यौन-शिथिलता, अनैतिक संबंध

रूपाकर्षण की मदान्धता, छल और पारस्परिक ईर्ष्या आदि भावों की अभिव्यक्ति इस कथा में सम्मिलित की है । लैंगिक व यौन संबंध इस कथा का मूल भाव रहा है । सुपर्णा एवम् गैंडा की मानसिक प्रतिक्रियाओं का चित्रण भी बड़ी सफलता से हुआ है । कथा वैय--क्तिक समस्यामूलक है । वेद का चेहरा ही शीर्षक को सार्थक करता है । सुवर्णा के कुछ पूछने पर - "पहले उसके होठ कांपे, फिर आकार-हीन चिबुक, फिर परस्पर जुड़ी अनाकर्षक घनी भौहें और फिर वह निष्कपट बदनुमा चेहरा रुदन की सहस्त्र विकृत झुर्रियों में एकदम ही सिकुड़ गया है ।" 1

{15} चल खुसरो घर अपने : {1982}

शिवानी की शैली और कथानक की भांति ही प्रस्तुत उप-न्यास का मनोविश्लेषण और चित्रांकन भी बेजोड़ है । नाटकीय स्थितियों और चित्रोपम वर्णनों ने इस उपन्यास को एक काव्यात्मक संविदन प्रदान कियाहै । सेवा, कर्तव्य बोध, प्रेम और सामाजिक बन्धनों के बीच घिरी शिक्षिता नारी के अंतर्द्वन्द्व की मर्मकथा है ।

कुमुद पर ही छोटी बहन उमा, भाई लालू और मम्मी की जिम्मेदारी है । परिश्रम करके फर्ज निभा रही थी किंतु उमा के अनिती धाम के कलंक एवम् भाई का गंजेड़ी और लोफर बनने के कारण वह एक विज्ञापन देखकर दूर दूर नौकरी करने चली जाती है ।

राजा की नौकरानी बनकर अनेक कष्टों को सहकर सुखप्राप्त करती है किन्तु राजा साहब की विक्षिप्त पत्नी की परिचर्या के लिये विवश होने के बावजूद भी घटनाचक्र ने उसके जीवन को इस प्रकार परिचालित किया कि वह स्वयं मनोरोग की शिकार हो गई ।

1 - "गैंडा" - पृ• 85

अंत में वह अपने घर वैसी ही स्थिति में लौट आती है ।

यह एक सामाजिक कथा है जिसमें खुसरो, राजा राजकमल सिंह, मालती आदि के मानसिक तनाव स्पष्ट हैं । यहाँ खुसरो (मीस जोशी" के पात्र के द्वारा शिक्षा प्राप्त नारी का नये रूप में विकास तथा तज्जन्य उलझने प्रस्तुत है । नायिका का संघर्षमय जीवन हमें ग्लानि व सहानुभूति करवाता है । मूल कथा के साथ नौकरानी मरियम तथा राजाजी के परिवार जनों की कथा जुड़ी हुई है जो क्षणिक कथा प्रवाह को अवरुद्ध करती है । इस कहानी से यह भी ज्ञात होता है कि नारी की सुन्दरता उसके लिये अधिक खतरनाक है जो अनायास ही कुशंका के कारण "सौत" का स्वरूप भी ग्रहण कर सक्ती है ।

(16) विवर्त : (1984)

प्रस्तुत उपन्यास में भी शिवानी यह सिद्ध करना चाहती है कि मनुष्य केवल विधि के हाथ का खिलौना मात्र ही है । यह एक प्रधान मनोवैज्ञानिक उपन्यास है जो वैवाहिक समस्या पर निर्भर है तथा मानव जीवन की रहस्यमयता का एक विलक्षण पहलू प्रस्तुत करता है । हीरा की सात पुत्रियों में से ललिता डबल एम.ए. करके एक स्कूल की हेडमास्टरनी है किंतु नियति के चक्र में फँस कर विवर्व की ओर खींची जाती है । वह एक अन्जान से ब्याह कर लेती है किंतु वह उसे आश्वस्त करके परदेश चला जाता है । एक साल तक कोई संदेश न पाकर गरीब बाप सबकुछ बेचकर उसे लंडन भेजते हैं अपितु वह उसकी पत्नी बच्चे आदि को देखकर बूत सी रह जाती है । वह ललिता का परिचय किसी अनजान व्यक्ति सा सभी के साथ करवा कर बाहर चला जाताहै । ललिता एक नीग्रो युवक की सहायता से वापस लौट आती है ।

यह एक वैवाहिक समस्यापूरक कहानी है । बड़े मनोवैज्ञानिक ढ़ग से ललिता और आर्थर का चरित्र चित्रित किया है । यह उपन्यास मानवजीवन की रहस्यमयता का एक विलक्षण पहलू प्रस्तुत करता है । कहानी के अंतर्गत भारतीय समाज की दुर्बलता का भी सही चित्रण प्रस्तुत किया गया है । लंडन में काले-गोरे का वर्ण विद्वेष चल रहा है । नीग्रो आर्थर की माँ के इस संदर्भ में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में ललिता मन ही मन कह उठती है - "हाँ, हमारे यहाँ और भी घृणित ढंग से होता है । काली और गोरी चमड़ी का भेद अब और विकृत हो गयाहै । अखबारों के विवाह-विज्ञापनों में अभी भी कन्या के गौर वर्ण की विशेष माँग की जाती है, हरिजनों का अब भी मशालों-सा जलाया जाता है, वर्षों का दासत्व भोगकर भी हम अपनी आत्मा को मुक्त नहीं कर पाये हैं । सफेद चमड़ी को देखते ही हमारी विवश दुम अब भी उसी विवशता से हिलने लगती है, गोर चमड़ी की भाषा, उनकी विकृत संस्कृति, उनकी सभ्यता को पकड़ने हम अब भी ललक रहें हैं, यह वर्ण-विद्वेष नहीं तो और क्या है ? [1] " ।

इस प्रकार हमारी निर्बलता की ओर भी संकेत किया है । आर्थर की अंधी माँ का वात्सल्य बडे भावात्मक ढ़ग से प्रस्तुत हुआ है । भारतीय समाज़ का विवाह आदि के लिये पाश्चात्य देशों के प्रति आकर्षण का दुस्परिणाम ज्ञात होता है । कहानी यथार्थ-वाद से जूड़ कर मार्मिकता से वैयक्तिकता के मोड़ पर आ जाती ह ।

§17§ महोब्बत : §1984§

प्रस्तुत लघु उपन्यास "आकष" निबंध के संलग्न छपा हुआ,

1 - "विवर्त - पृ॰ 61

[library stamp]

बड़ा मार्मिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । जिसमें एक नारी की मानसिक चेतना को जन्म दिया गया है । "महोब्बत" किसका नाम है ? वह क्यों रखा गया ? इसके बारे में शिवानी ने स्वयं लिखा है - "महोब्बत में यह खरे सोने की खाँटी लीक मैं कहाँ तक अछूती रख पायी हूँ यह बताना मेरा काम नहीं है..... केवल एक नाम और उसकी बिरादरी को मैंने ज्यों का त्यों रहने दिया है - वह है महोब्बत ...... उसकी सुरमें भरी उदासीन नीली आँखों से लेकर गोरे चेहरे की लुभावनी हँसी, मर्दाना पंजों की सशक्त तालियाँ...... लम्बी लम्बी डगे भरता वह ऐसे झूमते दूल्हे सा चलता जैसे कोई अलमस्त फिरंगी साड़ी पहने जा रहा हो । यही था महोब्बत । मैंने ही नहीं लखनौ में बहुतों ने उसे देखा होगा फिर सुना वह नहीं रहा । उसकी बिरादरी के विचित्र नियमानुसार उसे बहत्तर घड़े पानी में नहला खटिया पर बिठाकर उसकी मिट्टी उठाई गयी थी । ....... कहा जाता है मरने पर वह अभिशप्त बिरादरी अपने महाप्रस्थानी पथिक को मरदों के कन्धों पर ही विदा करते हैं जिससे वह अपनी विचित्र योनि में फिर जन्म न ले ।" [1]

उक्त पात्र के आधार पर इस उपन्यास की रचना हुई है । बिन्दू ऐतिहासिक व पुरातन चीजों की शौकिन है जिसके पिता डॉ॰ मनोहर बर्वे और सुविख्यात नर्तकी दामिनी के बीच अनमेल है । जिसके कारण दामिनी महिनों तक परदेश या बाहर रहती है और डॉ॰ मनोहर दौरे पर रहते हैं । मालिनी दामिनी की अंतरंग मित्र है । मनोहर और उसके बीच प्रेम संबंध से दामिनी के साथ घर्षण होता है । इतिहास के प्रोफेसर बोबी बिन्दू के साथ अनैतिक संबंध

1 - कालिंदी - पृ॰ 107

रखता है अंत में वह उसे छोड़ पत्नी और पुत्र के पास अपने वतन चला जाता है । बिन्दू की अवैध संतान जिसे ड्राईवर अनवर एक बस्ती में छोड़ आता है वही है महोब्बत ।

कथा के अंतर्गत एक माँ की ममता और पुत्र प्रेम व्यक्त हुआ है । अनमेल दंपत्ति के परिवार का क्या दुष्परिणाम आता है यह चित्रित है । सोमनाथ के समुद्र एवम् मन्दिर की भव्यता का भी सफल चित्रण है । समुन्द्र के तट पर बार बार चुम्बन, आलिंगन आदि के द्वारा रोमेन्टिक भाव उत्पन्न होता है । कहानी वैयक्तिक और आंशिक आँचलिक कही जा सकती है ।

﴾18﴿ पुतोंवाली : ﴾1986﴿

"पुतोंवाली" उपन्यास शिवानी की नवीनतम कथाकृति है जिसमें एक ऐसी स्त्री का मर्मस्पर्शी चित्रांकन किया गया है, जो पुतोंवाली होकर भी अंतिम समय तक निपूती जैसी रही । उसके पाँचों पुत्र बड़े ओहदों और शहरी चका-चौंध में डूबकर वृद्ध माँ को विस्मृत कर चुके है । इस कहानी से शिवानी ने यह कहने का प्रयत्न कियाहै कि तेजी से बदलते समाज में मानवीय मूल्यों का क्षय हुआ है और खून के रिश्तों में वह गाढापन नहीं रहाहै जो संस्कृति का मूल आधार था ।

इसमें उस समय के शिक्षण व शिक्षाप्रणाली बड़ो के प्रति आदर-भाव, मान - सम्मान, दोस्ती तथा पारिवारिक प्रेम और आधुनिक शिक्षण, माता-पिता के साथ बर्ताव आदि की तुलना यहाँ प्रस्तुत है । कितनी आपत्तियाँ और कष्ट झेलकर पुत्र को

उच्च शिक्षा दिलवाने के पश्चात व आधुनिक युग की पत्नी के दास बनकर माता-पिता की अवहेलना करते हैं इसका चित्रण यहाँ चित्रित किया गया है । "जानकर जँगली है आप, वह ससुर से कहती हाँफने लगी...... छुट का चुपचाप बैठा रहा न उसे पिता का पक्ष लेने का साहस हुआ न पत्नी का ।" [1] बदसूरत पुत्री को मनपसंद दामाद को सौंपते समय दहेज देना अनिवार्य था, तथा दाम्पत्य जीवन का प्रेम वृद्धावस्था में पुत्रों से त्यक्त हो जाने पर अधिक रहता है इसे भी यहाँ चित्रित किया गया है । कहानी में पारिवारिक समस्या प्रस्तुत है फिर भी मनोवैज्ञानिक चेतना को बड़ी सफाई से चित्रित किया है । पाश्चात्य शिक्षा का दुस्परिणाम तथा सामाजिक मूल्यों का अधःपतन अवगत करता है ।

{19} अतिथि :- {1987}

प्रस्तुत उपन्यास की कथा एक स्वयं सिद्ध युवती की मर्मस्पर्शी कहानी है जो एक सबला स्त्री के स्वाभिमान और संकल्प की रक्षा की वकालत करती है । वह भावुकता और परम्परागत गुलामी में जीनेवाली कमजोर नारी नही है । जया उस नारी का प्रतीक है जो दबी ढकी घुट रही स्त्रियों को सर ऊँचा करके जीने की प्रेरणा देती है ।

मंत्री माधवबाबू की पुत्रवधु जया स्वच्छन्द नशीली दवाओं की आदती ननद लीना तथा सास की परेशानियाँ सहती है । शराब-सुन्दरी तथा अफीम गाँजे का सौंबती पति कार्तिक के कष्ट को भी झेलती है । अंत में चोरी के लगाये गये आरोप से वह मायके चली

1 - "पूतोंवाली" - पृ॰ 30

जाती है । आई•ए•एस में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर ख्याति अर्जित करती है । कलक्टर बनकर मसूरी के निर्जन स्थल पर चली जाती है जहाँ उसे ममतालु माधवबाबू तथा कार्तिक की बहुत याद आती है । एक दिन अंतरंग सखी मालती भाभी के आने की खबर मिलती है । वह रात को निर्जन रास्ते से स्टेशन लेने जाती है किंतु जब निराश होकर लौटती है तो घर पर अतिथि रूप में कार्तिक प्रस्तुत है इस अतिथि को कैसे निकाल दें ?

मार्मिक अभिव्यंजना से लिखी गई सामाजिक कथा है जिसमें अधिक स्वतंत्रता और बड़ो की व्यस्तता से परिवार का कैसा दुस्परिणाम आता है इसका चित्र अंकित किया गया है । कुलीन उच्च संस्कार हमेशा स्थानभ्रष्टा नहीं है तथा अपने भले बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलता है इसका यथार्थ चित्रण है । कथा के अंतर्गत अन्य परिवेश तथा राजकीय बाबतों का विवरण होने से प्रवाह शिथिल हो जाता है ।

अंतरजातिय विवाहों का भी उदाहरण स्पष्ट हैं जैसे सरदारनी, हबसी, इरानी आदि से ब्याह होना दृष्टव्य है । दहेज प्रथा का भी ऊँची बोली लगाने वालों से ज्ञात होता है । जया के पिता के शब्द सार्थक है -

"सिंहस्कंधाधिरूढ़ा त्रिभुवन मखिलं तेजसा पूरयन्ती ।"

यहां पर एक अन्य भी यथार्थ बात कही है कि जब परिवार में से कोई एक व्यक्ति बहुत ऊँचे पद की प्राप्ति करता है तो उसका दुरुपयोग कई लोग करते हैं यह मंत्री के रिश्तेदारों के द्वारा प्रस्तुत हुआ है ।

नायिका के अंतर्मन में छिपा "अतिथि" इस शीर्षक को सार्थक करता है ।

1 - "अतिथि" - पृ• - 101

§20§ कस्तूरी मृग : §1987§

प्रस्तुत लघु उपन्यास पारिवारिक समस्या को लेकर लिखा गया है जिसमें वैवाहिक जीवन की अतृप्ति का एहसास होता है । बड़े संगीतज्ञ और कला पारखी राय बहादुर इक्बाल नारायण बली पतिव्रता पत्नी के बावजूद भी वेश्या राजेश्वरी बाई के कोठे पर ही डेरा डाल कर रहते थे । जब कई साल बाद वापस लौटते हैं तो कुष्ठ-रोगी और अपाहिज होते हैं । पुत्र उन्हें जबरन कुष्ठाश्रम में भेजता है किंतु एम्बूलैंस में ही उनकी मृत्यु होती है । जाते समय गिड़गिड़ाते हैं और छोटे बच्चे से मचलते हैं - "मुझे यहीं मरने दे नन्हे कहीं मत भेज । मैं जानता हूँ मैंने तेरे साथ अन्याय किया है, तू मुझे कभी माफ नहीं कर सकता पर बदला अपने अपाहिज बाप से मत ले "....... अंत में शापवृष्टि करते हैं - "

"भगवान करे तू भी कभी घर-गृहस्थी का सुख न भोगे - अंग अंग में कीड़े पड़े तेरे ।" [1]

इस प्रकार कनक से प्रेम होने पर तथा किसी के विरोध न होने पर भी पिता के अभिशाप के कारण उसे सुनना पड़ता है - "तब सुनो जिसका बाप जिन्दगी भर वेश्या के कोठे पर डेरा डाल रहा, सड़ सड़ कर कुत्तों की मौत मरा उसके बिटवा को हम क्या कोई भी अपनी बिटिया नहीं देगा ।" [2]

प्रस्तुत कहानी में कस्तूरी मृग की तरह गंध की तलाश में भटकते एक उपेक्षित पुत्र की व्यथा छीपी हुई है । उसे बरबाद करने वाले से प्रतिशोध लेने के लिए भी अक्षम बना देता है । इसमें एक पुरुष की मानसिक चेतना को उद्घृत किया गया है और पुरुष प्रधान मनोवैज्ञानिक

1 - कस्तूरी मृग - पृष्ठ - 28
2 - " - पृष्ठ - 34

कथा ज्ञात होती है । जिसमें बड़ी प्रतीकात्मक शैली से सामाजिक बंधन, संगीतमय वातावरण तथा वेश्या द्वारा बरबाद गृहस्थ जीवन और 'शाप' ... की यथार्थता का संकेत मिलता है । पुनरावृत्ति दोष "महोब्बत", सुरंगमा", गेंडा आदि की तरह व्यभिचारी जीवन और अनैतिक संबंध द्रष्टव्य है ।

निष्कर्ष :

शिवानी के सभी उपन्यासों के कथ्य के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि शिवानी एक समृद्ध कथानक और जीवन्त परिवेश की लेखिका है । उनके उपन्यासों में एक जीवन-दृष्टि है, जिसका हर लमहा भोगा हुआ है । उनके रचना विधान की दृष्टि से उनके उपन्यासों का एक विशेष ढाँचा मिलता है । उसमें उपन्यास कला की नवीनता, घटनाओं की नाटकीयता, वातावरण की सजीवता, भाषा शैली की काव्यात्मकता के साथ साथ युगीन समस्याओं का संवेदना पूर्ण चित्रण मिलता है । उन्होंने जीवन के हर पहलूओं पर दृष्टिपात किया है । शिवानी के उपन्यासों में उनका भोगा हुआ यथार्थ वर्णन है । नारी-चित्रण में भी शिवानी ने पक्षपात नहीं किया। उसके छलनामयी रूप को भी चित्रित करने में शिवानी का संस्कार-शील नारी-चित्त विचलित नहीं हुआ । उनके उपन्यासों में कुमाऊं की सुकुमारता, बंगाल की भावुकता, गुजरात की शालीनता और लखनऊ की कुलीनता झलकती है । विशेषत: नारीजीवन के नये नये परिदृश्यों को अंकित करने में और महानगरीय सभ्यता के बीच जीवन की विवश स्थितियों को स्थापित करने में शिवानी का विशेष योग-दान आधुनिक साहित्य में अप्रतिम है । कथा और शिल्प की दृष्टि से उनके उपन्यास हिन्दी साहित्य की एक उपलब्धि हैं ।

(2) कहानी :-

आज हम सब कहानी से परिचित है । कहानी भी एक कला है । कहानी पढ़ते पढ़ते या सुनते सुनते पाठक या श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाये । घटना के वर्णन से कौतुहलता या उत्सुकता पैदा हो तथा कहानी के साथ साथ आगे बढ़ते ही रहस्य गहरा हो जाय और अंत में कहानी की समाप्ति पर लोग वाह वाह कर उठे ये है कहानी की एक कला ।

कहानी के बारे में कई आलोचकों ने अपनी अपनी परिभाषाएँ दी है । कहानी किसी घटना के सुंदर ढँग से वर्णन करने का नाम है । छोटी कहानी साहित्यिक भावव्यंजना का सब से ठीक और संतोषजनक साधन है । "एक अँग्रेज लेखक की राय से कहानी एक पात्र के जीवन की महत्वपूर्ण घटना है जिसकी संक्षिप में नाटकीय रूप से अभिव्यंजना की गई हो ।" [1]

श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है - "कहानी उपन्यास से पुरानी विद्या है । गीत और कहानी मानव सभ्यता से साक्षरता काल के पहले से जूड़े हुए है । यद्यपि उनके लक्ष्य कुछ भिन्न रहे हैं । गीत में मनुष्य ने अपने को व्यक्त किया और कहानी से दूसरों का मनोरंजन । आदि काल से चली आती ये वृतियाँ इन दोनों काव्य रूपों से आज भी जूड़ी हुई है ।" [2] सबसे पहले कहानी लिखने की शुरूआत अर्थात् कहानी का गद्य रूप कहाँ से कैसे प्रचलित हुआ इस बारे में श्री उपेन्द्रनाथ अश्कजी ने लिखा है-

1 - हिन्दी कहानी एवं अंतरंग परिचय - पृ० 20

2 - हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - पृ० 170

"हिन्दी में कहानी की सबसे पहली पुस्तकें अपने अत्यंत अपरिपक्व रूप में वैष्णव काल अर्थात् 16वीं शताब्दि में गोकुलनाथ कृत "चौरासी वैष्णवन् की वार्ता" तथा "दो सौ बावन वैष्णवन् की वार्ता" के नाम से मिलती है । इनके बाद संवत 1680 (विक्रमीय) में जटमल ने "गोराबादल की कथा" रची जिसका आधार ऐतिहासिक था ।"[1] पुरातन काल में सभी कहानियाँ धार्मिक या ऐतिहासिक आधार पर थी और काव्य रूप में ही प्रचलित थी । जायसीकृत "पद्मावत्" इसका श्रेष्ठ उदाहरण है । इसका कारण यही था कि लोगों की चाहत काव्य रूप से अधिक थी तथा दूसरा कारण यह था कि उस जमाने में आज की तरह छापे खाने उपलब्ध नहीं थे ।

19वीं शताब्दि में हिन्दी गद्य को कुछ उत्तेजना मिली । तत् पश्चात् "हरिश्चन्द्र" युग में संस्कृत से अनुवाद हुए । हिन्दी की प्राचीन कहानियाँ धर्मप्रचार के लिये ही थी । कहानी को केवल मनोरंजकता के लिये लिखने का श्रेय हिन्दी में बाबू देवकी नन्दन खत्री को है, उन्होंने अपनी रचनाओं को कौतूहल प्रधान बनाया । "चंन्द्रकांता संतति" "भूतनाथ", वीरेन्द्रवीर" और "कुसुम कुमारी" आदि रचनाएँ इसी तरह की हैं ।

हिन्दी कहानी को एक दम अज्ञात स्थल से निकाल कर इतने ऊँचे शिखर पर पहुँचा देने का श्रेय स्व॰ प्रेमचन्द्र जी को ही प्राप्त है । उनके एक प्रख्यात लेख में लिखा है कि छोटी छोटी कहानियाँ लिखने की कला हमने यूरोप से ली है क्योंकि साहित्य के लिये जो प्राचीनों ने मर्यादाएँ बाँधी थी उसका उल्लंघन करना

1 - हिं॰ क॰ एवं अंतरंग परिचय - पृ॰ 15

वर्जित था । जैसे शेक्सपियर के अनुपम नाटक में वैचित्र्य, कौतूहलता, रोमांस आदि होते हुए भी जीवन की समस्याएँ या मनोवैज्ञानिकता न होने पर जीवन के सत्यरूप में इतना स्पष्ट न था ।

अश्कजी के मतानुसार "आधुनिक छोटी कहानी एक ऐसी रचना है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य या मानवजीवन अथवा समाज की किसी समस्या पर रखा गया हो । और जो इधर उधर बिना भटके सीधी अपने ध्येय पर पहुँच जाय और यदि उसमें कोई घटना वर्जित है तो उसका चित्रण इकहरा और रसपूर्ण हो । [1]

आधुनिक हिन्दी कहानी का इतिहास प्रयाग से निकलने वाली प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका "सरस्वती" से आरंभ होता है । सन् 1900 में इंडियन प्रेस के उत्साही संस्थापक श्री चिन्तामणि घोष ने नागरी प्रचारिणी सभा के परामर्श से "सरस्वती" को जारी किया । जयशंकर प्रसाद के बाद हिन्दी कहानी के आरम्भिक युग के दूसरे कथाकार प्रेमचंद हैं । जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द के समकालिन चतुरसेन शास्त्री पं॰ विश्वंभरनाथ वर्मा, पं॰ ज्वालादत्त श्री सुदर्शन आदि थे । तत् पश्चात् निराला, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा आदि का भी योगदान रहा । महादेवी जी ने अधिकतम् संस्मरण व रेखाचित्र लिखे हैं । जैनेन्द्रजी चमकते हुए तारे की तरह हिन्दी साहित्य में आये और मनोवैज्ञानिक कहानियों के कारण प्रेमचन्द के बाद वे ही हिन्दी साहित्य में छा गये । भगवती चरण वर्मा, इलाचंद जोशी का भी सुन्दर सुन्दर योगदान रहा है ।

1 - हिं॰ क॰ एवं अंतरंग परिचय - पृ॰ 22

शिवानी की कहानियों की ओर बढ़ने से पहले कहानी के कुछ तत्वों को देखना उपयुक्त रहेगा ।

एक विद्वान समालोचक के मतानुसार कहानी का प्राण है रस तथा दिलचस्पी प्राप्त करने के लिये आवश्यक उपकरणों की जरूरत । इन उपकरणों में प्रधानता है वस्तु की । कथानक, कथानक का गठन, वातावरण, शीर्षक, चरित्र चित्रण और अंत मुख्य उपकरण माने जाते हैं ।

चाहे घटना प्रधान या चरित्र प्रधान कथानक हो किंतु कथानक महत्वपूर्ण अंग है । कथानक के बिना पाठकों का मनोरंजन नहीं हो पाता । शरीर के लिये जिस प्रकार ढाँचे (कंकाल) की आवश्यकता है उसी प्रकार कहानी के लिये कथानक । किंतु विचार प्रधान या जीवन के किसी दृश्य को लेकर लिखी गई कहानियाँ भी है जैसे जैनेन्द्र की "पढ़ाई" या "जनता" ।

कथानक के गठन के बारे में अश्कजी लिखते हैं कि "वह सीधी अपने ध्येय की ओर जाती है इधर उधर न भटककर रास्ते में किसी प्रकार की रूकावट, अनावश्यक विस्तार, अप्रासंगिक बातचीत सब उसे असहय है । पंक्ति के साथ पंक्ति पैरेके साथ पैरा ऐसे गढ़ा होना चाहिए जैसे जंजीर की कड़ियाँ और प्रवाह उसमें नदी का सा होना चाहिए ।" 1

आरंभ, चरित्र चित्रण, वातावरण, शब्द योजना वाक्य विन्यास, वर्णन शैली आदि ऐसे होने चाहिए कि पाठक अपने आपको भूलकर उनमें गुम हो जाता है । कथानक जिस स्थल में अपने चरमोत्कर्ष पर होता है उसे "अंतिम बिन्दु" कहते हैं । पाठक

1 - हि०क० एवं अं० परिचय - पृ० 23

की उत्सुकता आकांक्षा बना रहना चाहिए । आगे क्या ? आगे क्या ? सोचता रहे और अंत आ जाय । कहानी का अंत उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि मध्य और आरंभ । अत्यंत अप्रत्याशित होते हुए भी कहानी का अंत स्वाभाविक दिखायी दे, जीवन से मेल खाये, सम्भाव्य हो, असंभव न हो । अंत पर पाठक को संतोष मिलना चाहिए । यदि हास्यरस की कहानी हो तो पाठक का हृदय अंत पर कह कहा मार उठना चाहिए, दुखी हो तो रो उठे और विस्मय हो तो आश्चर्य में रह जाय । स्व. प्रेमचंन्द की "शतरंज के खिलाड़ी" "गुल्ली डंडा" "नशा" "बड़े भाई साहब" ये अंत की दो तीन पंक्तियों के कारण अमिट छाप स्थापित करती हैं ।

कहानियाँ बहुत लिखी जाती है परन्तु उनमें से कुछ ही साहित्य में स्थायी स्थान प्राप्त करती है । उत्तम कथाकार के रूप में प्रेमचन्द, जैनेन्द्र आदि से लेकर अनेक कथाकारों ने ख्याति अर्जित की है जिसमें अपनी विशिष्ट शैली और कथ्य आदि के कारण शिवानीजी भी श्रेष्ठ कहानीकार है । जिन्होंने जीवन की अनुभूतियों को बीनकर सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा अनेक समस्याओं को लेकर उत्कृष्ट कहानियाँ लिखी हैं । उनका समस्त कहानी साहित्य निम्नलिखित संग्रहों में संग्रहित है । विस्तृत चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे ।

| | |
|---|---|
| ﴾1﴿ मेरी प्रिय कहानियाँ ﴾1974﴿ | ﴾2﴿ मैला ﴾1981﴿ |
| ﴾3﴿ स्वयंसिद्धा ﴾1977﴿ | ﴾4﴿ अपराधिनी ﴾1974﴿ |
| ﴾5﴿ रथ्या ﴾1977﴿ | ﴾6﴿ कैंजा ﴾1986﴿ |
| ﴾7﴿ माणिक ﴾1977﴿ | ﴾8﴿ पुतोंवाली ﴾1986﴿ |
| ﴾9﴿ लाल हवेली ﴾अप्राप्य﴿ | ﴾10﴿ टोला ﴾अप्राप्य﴿ |

(1) मेरी प्रिय कहानियाँ : (1974) इस कहानी संग्रह में कुल मिलाकर दस कहानियाँ छपी हुई हैं जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं। (1) करिए छिमा (2) के (3) पुष्पहार (4) शपथ (5) मधु-यामिनी (6) सती (7) ज्येष्ठा (8) तोप (9) अपराधी कौन (10) चीलगाड़ी

इन सारी कहानियों को पढ़ने से पता चलता है कि शिवानी ने अपनी कहानियों में विविध विषयवस्तुओं और भावों का समावेश किया है। इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों का प्राधान्य हैं।

उपरोक्त सभी कहानियों की कथा वस्तु भिन्न भिन्न हैं तथा अपनी अपनी विशिष्टता से परिपूर्ण है। "पुष्पहार" के अतिरिक्त सभी कहानियाँ नारी प्रधान हैं।

कुछ कहानियों की मूल संवेदना को अब हम देखेंगे।

1. चील गाड़ी की कथा वस्तु आत्मकथात्मक या संस्मरणात्मक शैली से लिखित है। ससुराल जाने के बाद भी छोटे रुग्ण मातृ-विहिन भाई की याद आती है। बचपन में जेट विमान को चील गाड़ी से पुकारकर अचरज से दौड़ता हुआ भाई याद आता है। "करिए छिमा", पुष्पहार, अपराधी कौन, शपथ, के ये मनोवैज्ञानिक कहानियां है।

"सती, तोप, ज्येष्ठा ये सामाजिक कहानियां है। संसार में स्त्रियों के कई रूप होते हैं। स्त्री के स्वभाव को पहचानने में

कहा जाता है कि बड़े बड़े ऋषि मुनि भी भूल कर बैठे हैं । "सती" में एक ऐसे ही पात्र की रचना लेखिका ने की है । आदर्शमयी वाक्-चातुर्य एवम् जजोड़ अभिनय से रेल में यात्रियों की सहानुभूति प्राप्त करके सभी को ठग कर लूट कर सती कैसे नौ-दो ग्यारह हो जाती है येह अपनी विशिष्ट शैली में बतलाया है ।

स्वभाव और शरीर में "तोप" उपनाम धारण की हुई वेरोनिका का चरित्र भी लेखिका ने बड़े ही चातुर्य से किया है । ढ़लती उम्र में भी अर्थात् वृद्धत्व के नीकट पहुँची हुई तोप भी रसिकता से अछूती नहीं है । अपने सेन्टिोरीयम में आश्रित राजेन्द्र और सैम्युअल जैसे गरीब किंतु प्रतिभा सम्पन्न नौजवान को अपनी उदारता प्रदर्शित करके जाल में फंसाकर ब्याह लेती थी ।

पुनरावृत्ति की दृष्टि से देखें तो पुनरावृति दोष तोप की वैरोनिका और "के" की कमला के पात्रों में देखने मिलता है । इसके अतिरिक्त अपराधी कौन सती और ज्येष्ठा में भी एक ही घटना (चोरी की) पुनरावर्तित है । "करिए छिमा" शिवानीजी की उत्तम मनोवैज्ञानिक कृति है । जिसको पढ़कर एक अनपढ़ पतिता पर तरस आती है जो अपने अवैध शीशु की हत्या के लिए कटघरे में खड़ी है । जिसके पात्रों की वाचा एवम् प्रत्येक घटनाओं के लिय शिवानीजी को बहुत श्रम रहा होगा । कहानी सेक्स की ओर बढ़ती है । इसमें प्राकृतिक वर्णन भी बहुत सफलता से चित्रित है । "तोप" और करिए छिमा कहानी के अंतर्गत श्रृंगार रस की मात्रा की अधिकता के साथ साथ सैक्स से संबंधित कई उक्तियाँ भी पाई जाती है । "शपथ" में शिवलिंग के आगे ली गई झूठी शपथ से कालिंदी भाभी की प्रेतछाया से शुभ्रा की विकल जिन्दगी का निरूपण मनोवैज्ञानिकता का अदभूत उदाहरण है ।

"पुष्पहार" कहानी के द्वारा भी झूठे समाज पर प्रकाश डाला है । लोकनेता लोगों की भलाई के लिये चाहे कितना भी करें किंतु समाज की नजर में उसकी एक ही बुराई के कारण हजारों अच्छाइयाँ धुल जाती है और समाज उसे बुरी नजर से ही देखता है ।

इस कहानी संग्रह की अधिक चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे ।

(2) गैंडा : (1981 तृतीय संस्करण)

शिवानीजी के इस कथा संकलन भीतर गैंडा लघु उपन्यास एवम् अन्य दो कहानियाँ संकलित की गई है, भीलनी और चलोगी चंद्रिका ?

भीलनी :- प्रस्तुत कहानी नारी प्रधान है । दो कश्मीरी बहनों में एक खूबसूरत और दूसरी श्यामवर्णी, बदसूरत भद्दी एवं अनाकर्षक है । बड़ी बहन ने अपनी छोटी के लिये अपने चरित्रहीन पति के साथ स्वयं आत्महत्या की और पुलीस बयान में एक काली भीलनी का बहाना बनाकर चल बसी । वास्तव में अपने पति के साथ रंगेहाथ पकड़े जाने वाली अपनी छोटी सौंदर्यवान बहन ही थी। यह एक मनोवैज्ञानिकता को उद्घाटित करती हुई कहानी है ।

चलोगी चन्द्रिका :- मार्मिक प्रसंगों से सुगठित यह एक नवीन कहानी है । चन्द्रवल्लभ और चन्द्रिका की वैयक्तिकता प्रधान अंश है । चन्द्रवल्लभ पहाड़ के नियम अनुसार भाभी की बहन को ब्याह नहीं सकता था किंतु वही उसकी प्रियतमा है उसके बिना उसे चैन नहीं है । अपनी अनुपस्थिती में चन्द्रिका की शादी हो चूकी । कई साल बाद खुद विधुर हो जाने पर और चन्द्रिका निःसंतान विधवा

हो जाने पर भी उसे चन्द्रिका का सौंदर्य अपनी नजर के सामने दिखायी देता है और चिट्ठी लिखकर उसे लेने जाता है । छूपकर देखता है कि जो चन्द्रिका उसने देखी थी वह नहीं है उसका सौंदर्य नष्ट हो गया है उसकी कल्पना के सपने चूर हो जाते हैं और वापस लौटता है । यहाँ एक ही पहलू को लेकर लिखी गयी कहानी है ।

(3) स्वयंसिद्धा - (1977)

स्वयंसिद्धा उनकी अनुपम कहानियों का संग्रह है । जिसमें नारी प्रकृति के विभिन्न कोणों के चित्रण चित्रित किये गये हैं । प्रत्येक कहानी रुचिकर, भावपूर्ण और मर्मस्पर्शी है ।

इस कहानी संग्रह में चार कहानियां संगृहित हैं । चारों कहानियां नारी प्रधान है और भावपूर्ण है । स्वयंसिद्धा व अपराजिता में मार्मिक अभिव्यंजना के साथ स्वाभिमानी नारियों का चरित्र है । अपने अपने चरित्र को बड़ी रोचकता से संवारती मनोवैज्ञानिक कथावस्तु का निरूपण है । एक और से देखें तो आंचलिक कथा याने एक वैयक्तिक समस्या को लेकर कथा चलती है। अपने युग की छाया - प्रणालिकाएँ प्रस्तुत है । साधु, और योगियों का युग था इसका असर इन साहित्य पर है ।

"निर्वाण", और "अपराजिता" में तथा "स्वयंसिद्धा" और अपराजिता" की कथावस्तुओं में कहीं कहीं साम्य या एक ही घटना का पुनरावर्तन अवश्य देखने मिलता है किंतु उत्कृष्ट शैली और भाववाही घटना क्रम के कारण शायद ही पाठक को इसका एहसास होता है । "सौत" में एक सामाजिक कथा का भाव है तथा एक यथार्थवादी

व्यंजना है । आवश्यकता से अधिक नम्रता का विपरित असर होता ही है यह नग्न सत्य को उद्घाटित करती हुई कथा है ।

(4) अपराधिनी : (1974)

प्रस्तुत संकलन में उनकी एक ही मन:स्थिति की कहानियाँ हैं । जेल के सीखचों के पीछे बन्द अपराधिनियों के हृदय में झांककर उनकी आप बीती प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो बहुत ही मार्मिक है। इस संकलन की सभी कहानियाँ नारी प्रधान है । सामाजिक परिवेश से तंग आकर इन पात्रों ने विकट मन:स्थिति में किये हुए अपराध से बंदी हैं ।

इस संकलन में पांच कहानियां हैं ।
जारे एकाकी, छि: मम्मी तुम गंदी हो और साधो ऐ मुर्दन कै गांव तीनों कहानियों में किसी ने अपने प्रेमी से मिलकर पति की हत्या की है तो किसी ने डकैती की थी किसी ने अपने पुत्र का गला घोंट दिया था तो किसी ने अन्य अपराध अपितु ज्यादातर खून के अपराध ही अंकित है । सिर्फ पंद्रह वर्ष की बालिका वधू ने ही कितने खून करके ठगाई की थी जो हमारी कल्पना के बाहर है। चूंकि शिवानीजी ने ऐसी अपराधिनियाँ का चित्रण अपनी लेखनी से बड़ी मार्मिकता से संवारा है फिर भी लेखिका यही कहती है कि- "जिसका चित्र खींच रही थी, या तो वह ही हिल गई है या मेरी फिल्म ही कहीं expose हो गई है ।" 1

यद्यपि मनोवैज्ञानिकता पर अवलंबित कहानियां है, पर जीवन की यथार्थता ठूंस ठूंस कर भर दी गई है । "छि: मम्मी तुम गंदी हो"

1 - अपराधिनी भूमिका - पृ० 6

इसमें आंशिक रोमांस - रोमांतिक संवेदना है । "अलखभाई" यह औपन्यासिक कथा से जुड़ी हुई कहानी है । जिसमें धार्मिक व सांस्कृतिक संवेदना का चित्रण मिलता है । अनोखे बंदिनी रूप में दो वैष्णवियां हैं । जिन वैष्णवियों का दीक्षा से पहले तीन हत्याओं के अपराध से साध्वी जीवन स्वीकृत करके प्रायश्चित करना - यह एक मार्मिक चित्रण बड़ी दक्षता से किया है ।

"चांद" भी एक वैयक्तिक अनुभूति प्रस्तुत करती कहानी है । जिसमें चांद ने अपराध किये हैं, वह भी एक अपराधिनी है जिसके अपराध व्यक्तिगत संवेदना से संलग्न है ।

इस कहानी में स्वच्छंदता वाद दिखायी देता है । कहानी रोमेंटिक है - सेक्स से संबंधित उक्तियां भी उद्धृत है जैसे - "केवल खीर मिष्टान्न ही नहीं चखती महारानी, भुने चने, लाई से भी परहेज नहीं है अभागी को, " [1] "एक पल को उसकी सस्ती सज्जा के बीच झांक रहा उस निर्लज्ज स्वस्थ युवती का मुंहफट यौवन हम दोनों को एक साथ भाला सा मार गया । क्या ब्लाउज के भीतर रोडे बांध लिए थे बेहया ने ? [2]

इस प्रकार दोनों वैष्णवियां और चांद ये तीनों समाज के कट-घरे में खड़ी अपराधिनियां नहीं है किंतु विधाता की नजरों में वे अपराधिनियां ही हैं ।

(5) रथ्या - (1977)

इस संकलन में "रथ्या" उपन्यास के अतिरिक्त अन्य पाँच कहानियां हैं । "अपराधी कौन", "तोप", और "मधुयामिनी" इन तीनों कहानियों की चर्चा "मेरी प्रिय कहानियां" संग्रह के

1- अपराधिनी (चांद - पृ० 83)
2- अपराधिनी वही पृ० 84

अंतर्गत की गई है । "प्रतिशोध" और मरण सागर पारे" कहानियों में से "मरण सागर पारे" में शिवानीजी के जीवन क संस्मरण है । उनके नन्द की जिठानी का भावपूर्ण चित्रण है । एक वटवृक्ष की भांति अपना सब कुछ लूटाकर भी अन्य के जीवन को किस प्रकार से सजा दिया और परिवार की एक मात्र भाग्यवती जननी बन चुकी थी । इसका यथार्थ चित्रण है । कथा सामाजिक परिवेश की होते हुए भी रोचकता से आगे बढ़ती है और अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का रसप्लावित करती है । वैसे सस्ती मजाक के रूप में कलम मार्यादा चूक कर रोमांस की ओर तनिक उठती है फिर भी यथार्थता के परिवेश में छूप कर संयमित हो जाती है । पारिवारिक समस्या एवं भावुकता ही कथा का प्रधान अंश है । "प्रतिशोध" एक मार्मिक कथा है । सौदामिनी अपने अभिमानी एवं अनोखी प्रतिभा से अपने अफसर पति शंकर को पराजित कर गयी थी । फिर भी शंकर अपनी धार्मिक चुस्तता रूपी चोटि द्वारा कभी कभी सौदामिनी को संयमित करता था । पत्नी के मना करने पर भी वही चोटी के साथ वह परदेश भी घूम आया था । यहाँ कहानी सामाजिक परिवेश से यथार्थता की ओर खींची जाती है । कतिपय रोमेंटिक उक्तियों का भी उल्लेख है । सौदामिनी का अनुशासन और संयम से शंकर की शारीरिक भूख नहीं संतुष्ट हुई और वह नकाब पहनकर एक किशोरी का उपभोग करता रहा । दोनों एक दूजे में पागल थे किंतु किशोरी सगर्भा होने से प्रेम का नकली नकाब हटाकर शंकर उसे धकेल देता है । विवश होकर किशोरी आत्महत्या कर लेती है किंतु उसकी एक चिट्ठी सौदामिनी के हाथ आती है और बीस हजार की धनराशि देकर पीछा छुड़ाती है । परिणामवश शंकर से बेरहम पूर्ण प्रतिशोध लेती है । उसकी दंभी-चोटि काटकर छटपटाती है । यहाँ गृहस्थ जीवन की समस्या है ही

साथ साथ पाश्चात्य शिक्षण के प्रभाव से युवक-युवतियों का यौन आकर्षण दृष्टिगोचर होता है । कहानी में नये और पुराने आदर्शों का द्वन्द्व भी प्रतिबिंबित है ।

(6) कैंजा : (1975) दूसरा संस्करण

इस संकलन में "कैंजा" उपन्यास के अतिरिक्त अन्य 7 (सात) सशक्त एवं मर्मस्पर्शी कहानियाँ है । सातों कहानियों के कथानक अपने आप में विशिष्ट महत्व रखते हैं । "भिक्षुणी", "सती", और "मौसी" नारी प्रधान कहानियाँ हैं । सामाजिक परिस्थितियों से गुजरती हुई गृहस्थजीवन की समस्या को "भिक्षुणी" में मुखरित की है । "मौसी" इस कहानी संग्रह की बहुत ही मार्मिक कहानी हैं । जिसमें नारी की अप्रतिम त्याग भावना का चित्रण बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है । यहाँ पर अनमेल विवाह का दुष्परिणाम भी देखने मिलता है । अपनी बहन का श्राप मिटाने अपनी संतान का त्याग करके एक उच्च आदर्श भावना "तिला" के पात्र द्वारा प्रस्तुत है ।

"ज्यूडिस से जयंती" में पारिवारिक समस्या चित्रित है तथा नये और पुराने आदर्शों से वैयक्तिक तनाव देखने मिलता है । वैसे आंशिक आंचलिकता की ओर खींची गई है । "भिक्षुणी" में भी गृहस्थजीवन की ही समस्या है और सामाजिक कहानी है । वैसे उस युग में सांसारिक या अन्य समस्याओं के कारण संन्यास लेना सामान्य हो गया था । इस कहानी पर भी उस युग की वही छाया का असर है ।

कभी कभी कथाकार का अन्य भाषाओं का प्रभाव अपनी रचना पर अवश्य अंकित होता है । "अनाथ" में बांग्ला भाषा का आंशिक प्रभाव रहा है । बातचीत के दौरान पात्र इस भाषा का प्रयोग करते हैं । इसमें जीवन की वास्तविकता की ओर अंगुलीनिर्देश है । यह एक मार्मिक कहानी है और बड़ी ही भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत है । जिसमें समाज के जूठे समाज सेवकों और उद्धारकों की ओर कटाक्ष किया गया है । वैसे ही "मामाजी" भी मर्म स्पर्शी एवम् हृदय को छू लेने वाली कथा है । जो सामाजिकता से यथार्थवाद की ओर बढ़ जाती है । जुड़वा भाई कटे हाथ और नंगे तन से पागल बनकर भूख से व्याकुल होकर रक्षा बंधन के दिन ही बहन की आलिशान कोठी पर आता है किंतु जूठे समाज के परिवेश के बंधनों तथा नियमों से पागल को हकाल दिया जाता है तथा उपस्थित श्रीमंत अतिथियों के आतिथ्य में व्यस्त हो जाने वाली बहन की मनोदशा का चित्रण बहुत ही कुशलता एवं भावात्मकता से किया गया है ।

"भूल" वैयक्तिक समस्यामूलक कहानी है और बड़े भावात्मक शैली में चित्रित की गई है ।

(7) माणिक : (1977)

प्रस्तुत संकलन में "माणिक" लघु उपन्यास के अतिरिक्त अन्य दो लम्बी कहानियाँ है । (1) "तर्पण" और (2) "जोकर" । "तर्पण" एक पारिवारिक समस्या को लेकर चलती हुई कहानी है । जिसमें नायिका का संघर्षमय जीवन प्रस्तुत है । नायिका किस अनोखे ढंग से माता-पिता एवं अपने परिवार का तर्पण करती है इसका तादृश वर्णन है । कहानी एक ही पहलू पर आधारित है ।

एक ही कथा के साथ अन्य परिवेश एवं छोटी छोटी बातों का विस्तृत वर्णन नायिका से संबंधित छोटे छोटे प्रसंग आदि के वर्णन से कथा प्रवाह शिथिल बन जाता है । जैसे कि स्वादिष्ट खाद्य व्यंजन, पहनावा, गहनों आदि का विस्तृत वर्णन क्षणिक रसभंग की ओर संकेत करता है । कतिपय प्राकृतिक वर्णन भी लेखिका ने सफलता से चित्रित किया है । "जोकर" वैयक्तिक चेतना प्रस्तुत करती कहानी है । बहुत ही मार्मिकता से एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से कहानी यथार्थता की ओर संकेत करती है । वास्तविक जीवन में भी अपने दु:ख को सहकर अन्य का मनोरंजन करने वाला "जोकर" की मार्मिक कथा यहाँ प्रस्तुत है । सुखी सम्पन्न और वैभवी परिवार की नायिका माँ की आंतरिक मनोवेदना का भावात्मक चित्रण चित्रित किया गया है । जो न कभी हँसती है या रो सकती है । कहानी वैयक्तिक अभिव्यंजना प्रकट करती हुई आगे बढ़ती है ।

(8) पूतोंवाली : (1986)

इस संग्रह के अंतर्गत "पूतोंवाली" और "बदला" दो लघु उपन्यास हैं । इसके अतिरिक्त "श्राप" "लिखूं" और "गंगाभाई" नामक तीन कहानियां हैं । तीनों के कथानक नवीन हैं । संसार में कभी ऐसी भी घटना होती है कि निर्दोष होते हुए भी दोषित किया जाता है और उच्च न्यायालय में भी खुद परास्त होना पड़ता है । तब ईश्वर को सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में सोचकर क्रोध से अन्याय करने वाले को श्राप दे देते हैं ।

एक युग था जब ब्रहम तेज से दिया गया श्राप कभी खाली नहीं जाता था । यह कहानी सामाजिक पृष्ठभूमि पर अवलंबित है । स्त्री समस्या को लेकर लिखी गई यह एक मार्मिक कहानी है । दहेज न लेने का सिर्फ दिखावा करके विवाह के पश्चात् कैसा रंग बदलते हैं इसका वर्णन इस कहानी में है । "दिव्या" एक नाजुक, रूप व गुण सुन्दरी की बड़े धनवान, दंभी और कुत्सित चेहरे वाले युवक से शादी होती है । बिना किसी दहेज पुत्री को बिदा करके माता-पिता प्रसन्न थे । किंतु थोड़े ही महिनों में जलाकर उसकी हत्या कर दी गई । इसका न कोई सबूत था न साक्षी । किंतु अस्पताल में अंतिम साँस लेते समय माँ को दिव्याने ही कैफियत दी । साक्षी में उस वक्त अस्पताल के कमरे में हाजिर उसकी मौसी ही थी । किंतु मौसी ने भी दिव्या की माँ को समर्थन नहीं दिया । अंत में "श्राप" के अलावा कोई चारा न रहा । कहानी अंत तक एक ही आंचल को लेकर चलती है अत: आंशिक आंचलिक मानी जा सकती है । कहानी में जूठी इज्जत के कारण अनमेल विवाह का दुष्परिणाम दृष्टिमान है । कहानी आम तौर पर यथार्थवाद की धरातल पर स्थित है ।

"लिखु" कहानी का कथानक नवीन है । एक ओर से देखा जाय तो कहानी नारी प्रधान है । अपनी अंतरंग सखी जिसको मिलने वह कई वर्षों से तड़पती रही है वह जब कई वर्ष बाद एक ऐसे मोड़ पर मिलती है कि न तो उसे बाहों में लेकर अपना भाव प्रदर्शित कर सकती है या न अपने घर ले जाकर अपने अनंत प्रेम का प्रमाण दे सकती है । कहानी आंशिक यथार्थता की ओर झुकी हुई है । "प्रिया" के पात्र के द्वारा लेखिका पाठक को आधुनिक युग की ओर खींचकर ले जाती

है । "प्रिया दामले" उनकी सहपाठिनी है । वह पूरे आश्रम में अपने रोबीले और स्वच्छंद स्वभाव के कारण ख्यातनाम थी । लड़के से बाल, पहनावा और सीगरेट पीना उसकी आदत थी । वह बड़े गर्व से कहती - "क्यों क्या बुराई है इसमें ? स्त्रियाँ तंबाकू, जर्दा खा सकती हैं तो सिगरेट क्यों नहीं पी सकती भला ? और फिर मुझे पकड़ने वाला आज तक पैदा नहीं हुआ । "[1]

इस कहानी में मनोवैज्ञानिक अभिव्यंजना प्रस्तुत है । एक बच्चे के बाद प्रिया का जातिय परिवर्तन होना एक मार्मिक अंश है ।

... यहाँ आधुनिक युगीन छाया अंकित है । कहानी भावात्मक रूप से आगे बढ़ती जाती है । जिस सखी से मिलने के लिये वह वर्षों तक तरसती रहती है वह सखी नैनीताल के अंधेरे जन विहिन रास्ते पर मिलती है । लेखिका को बाँहों में भींच लेती है लेकिन वह सखी "प्रिया" अब लड़की नहीं किंतु जातिय परिवर्तन से लड़का बन गया था । लेखिका एक झटके से उसे ढकेल कर दौड़ जाती है ।

कहानी बड़ी मार्मिक और मनोवैज्ञानिक है और आंशिक रोमैंटिक कही जा सकती है ।

संकलन की अंतिम कहानी है । "मेरा भाई" । भाई और बहन का प्रेम अवर्णनीय है । भाई चाहे कैसा भी क्यों न हो, किंतु बहन उसे कभी भी याद किए बिना नहीं रहती । प्रस्तुत कहानी सामाजिक समस्या पर अवलंबित है । लेखिका ने पड़ोशी लड़के सुबव्या को भाई बनाती है । वह कोयले जैसा काला भैंगी आँख वाला और अनाथ था । वह हर साल राखी बंधवाता था । लेखिका का परिवार

1 - पूतोंवाली पृ० 105

तत्पश्चात् कुमाऊँ में आ गया था । कई साल बाद जब एक बार लेखिका रेल गाड़ी से सफर कर रही थी । रात को यकायक डिब्बे में घुस आया, कंगन, अंगुठी, सारे जेवर और सूटकेस उठाकर जा रहा था । किंतु लेखिका के गिड़गिड़ाने से पासपोर्ट लौटाते समय उसने लाईट चालू करके फोटो देखा और अपनी बहन को पहचाना । फौरन सब कुछ छोड़कर किसी का चुराया हुआ बटुआ भी वहाँ ही डालकर शीघ्रता से चला गया । कहानी यथार्थ है । सत्य है कि जब सगे भाई को चोर या डकैत बनने में देर नहीं लगती तो वहाँ सुवयुवा के लिये संभावना है । कहानी सामाजिक अंचल से वैयक्तिकता की ओर बढ़ जाती है । अगर भाई न बनाया होता तो वह वाकई लूँटी जाती ।

निष्कर्ष :-

अंत: यह स्पष्ट है कि शिवानीजी की सभी कहानियाँ एक अमीट छाप अंकित कर जाती है । इसका कारण यही है कि मानव-जीवन की सभी अभिव्यंजनाएँ एवम् सभी अनुभूतियाँ को लेकर चलती है उनकी कथा वस्तु सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आधार पर अव-लंबित होते हुए भी समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मन को छू लेने वाली है । कथा एक प्रवाह की तरह बिना रुके आगे बढ़ता रहता है किंतु क्वचित कई कहानियों में कथा प्रवाह मंद हो जाता है क्योंकि लेखिका ने समाज के अंतर्गत जो जो देखा है, जिसकी अनुभूति की है उस चीजों का वर्णन करने का मोह छोड़ नहीं सकती है । अतएव कई जगहों पर पहनावा का वर्णन खाद्य व्यंजनों का वर्णन तथा प्राकृतिक सौन्दर्य और उस व्यक्ति का व्यक्तिगत पारिवारिक संबंध का वर्णन कहानी के प्रवाह में अधिक अखरता है ।

§3§ संस्मरण एवम रेखाचित्र

रेखाचित्र और संस्मरण के बीच विभाजक रेखा बहुत ही सूक्ष्म है । प्राय: इनका रूप परस्पर अंतर्भुक्त ; भी दिखाई देता है । रेखाचित्र में व्यक्तित्व को समग्रत: और बहुत कुछ स्थिर रूप में देखने की चेष्टा होती है जबकि संस्मरण व्यक्ति को गत्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है तथा इसमें व्यक्ति के अतिरिक्त बाह्य घटनाओं को भी महत्व दिया जाता है । अत: सामान्यत: संस्मरण का पात्र विशिष्ट घटनाओं को भी संभव करने वाला कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति ही सकता है जबकि रेखाचित्र में साधारण पात्रों का अंकन भी उतनी ही दक्षता से किया जाता है कि विख्यात चरित्रों का । अपनी प्रकृति में रेखाचित्र किसी सीमा तक संस्मरणात्मक होगा पर संस्मरण में रेखाचित्र विहित हो यह जरूरी नहीं है ।

श्री सत्यपाल चुध ने रेखाचितत्र के संदर्भ में कहा है - "साहित्य का वह गद्यात्मक रूप, जिसमें एकात्मक विषय विशेष का शब्द रेखाओं से संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया जाता है वह रेखाचित्र या शब्द चित्र है ।" [1]

रेखाचित्र खींचना भी एक कलाहै । थोड़ी सी रेखाओं के द्वारा सजीव चित्र खींचना कुशल कलाकार का काम है जिसके लिये कठोर साधना की आवश्यकता है । कभी सजल, कोमल अनुभूतियाँ, हास बिखेरती है तो कभी संघर्ष । "मनुष्य द्वारा अनुभूत भावों ही रेखाओं रंगों, गतियों, ध्वनियों या शब्दों के माध्यम से हुई बाह्य अभि-व्यक्ति ही कला है । [2]

1 - रेखाचित्र कला संमिलन पत्रिका भा-44-सं॰ 2,4
2 - कला और सौंदर्य

संस्मरण लिखने का पहला नियम है कि आवश्यक बातचीत को अथवा भावों को नोट कर लेना चाहिए । स्फीटन ज्विगने अपनी पुस्तक "Adepts in self Portrirai-ture" में लिखा है - "जिस तरह किसी नदी की तह में पत्थर लुढ़कते रहते हैं उसी प्रकार स्मरण शक्ति की धारा में घटनाएँ एक दूसरे का अतिक्रमण करती रहती है । प्रारम्भिक भावनाओं पर बाहरी भावनाएँ छा जाती है और नये संस्मरण पुराने संस्मरणों में कुछ परिवर्तन ला देते हैं ।

रेखाचित्र सम्वेदनात्मक, स्नेह - श्रद्धा भक्ति से सम्बन्धित, मनोवृत्ति प्रधान, प्रकृति सौन्दर्यमूलक, तथ्यप्रधान, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय भावना से समन्वित, तथा व्यक्तिप्रधान आदि हो सकते हैं । जिनके वर्णन की शैलियाँ कथात्मक, निबन्ध, वर्णनात्मक तरंग, आत्मकथात्मक, डायरी, सम्बोधन, सूक्ति या संवादमय हो सकती है । जो भावात्मक, लाक्षणिक, चित्रात्मक, दार्शनिक, सम्वेदनात्मक तथा आलंकारिक रूप में हो सकती है ।

इस कला में महादेवी वर्मा का नाम विशिष्ट स्थान रखता है । "अतीत के चलचित्र" "स्मृति की रेखाएँ तथा "पंथ के साथ" उनकी अनुपम कृतियाँ है । "महादेवी के रेखाचित्रों में नारीवेदना के मार्मिक अर्थों को अभिव्यक्त किया है । उन्होंने समाज के निम्न घटकों के चरित्र उठाये हैं, ऐसे दीन हीन व्यक्तियों का स्पर्श किया है जिनमें मनुष्यता है । " 1

रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री पदुमलाल बख्शी, सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ने भी "कुल्लीभाट" जैसे अस्पृश्यता प्रेरक संवेदनशील विषय पर लिखा है । श्री बनारसी दास चतुर्वेदी, डॉ॰ नगेन्द्र ने चेतना के बिम्ब के माध्यम से लिखे हैं ।

1 - हि, गद्य साहित्य का विकास क्रम - पृ॰ 168

आधुनिक संस्मरणात्मक शैली में सत्यजीवन वर्मा, औंकारशरद, प्रेमनारायण टण्डन, पद्मिनी मेमन, शिवानी, महेन्द्र भटनागर, बच्चन, दीनकरजी आदि उल्लेखनीय है । जिसमें बनारसीदास तथा माखनलाल चतुर्वेदी का महान योगदान रहा ।

इसी परम्परा में दीनकर कृत लोकदेव नेहरू, सत्यजीवन कृत भारतीय की एलबम, औंकार शरद लिखित लंका महाराजिन, पद्मिनी रचित चांद तथा शिवानी कृत आमादेर शांतिनिकेतन ये उत्कृष्ट कृतियां है ।

इस गद्य आयाम की जानकारी के बाद अब हम शिवानी जी की कृतियों की ओर अभिमुख होंगे ।

शिवानी ने लिखा है कि - "मुझे जहाँ अपने उपन्यास कहानी के काल्पनिक चरित्रों को उठाना, गिराना, हँसाना, रुलाना, साँस लेने-साही सहज स्वाभाविक लगता है, वहीं उन व्यक्तियों को जिन्हें मैंने बहुत निकट से देखा है, अपनी लेखनी से स्मृतिबद्ध करना उतना ही दुरूह प्रतीत होता है । नजाने कितनी घटनाएँ अब तक अछूती पड़ी कितनी ही स्मृतियां, उन्मुक्त ठहाके, दबी सिसकियां, पद पद पर मेरा हाथ थाम लेती है ।" [1]

1 - चार दिन की - पृ॰ १

संस्मरण हरेक व्यक्ति की नीजी संपत्ति है, उसके उपभोग में उसे दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है । कई व्यक्ति इसी आनन्द को सर्वभोक्ता बनाने लूँटा देते हैं । शिवानीजी ने भी अपनी स्मृतियाँ - संस्मरण अपनी कुशल लेखनी से पाठकों के बीच लूँटा दी है । इसी कथात्मक संस्मरण ने उन्हें हिन्दी में गौरव-पूर्ण स्थान प्रदान किया है । जितनी लोकप्रियता अपनी कहानियाँ एवं उपन्यासों से हासिल की है उतनी ही लोकप्रियता उन्होंने संस्मरण तथा रेखाचित्रों से प्राप्त की है ।

शिवानी के संस्मरण व रेखाचित्र निम्नलिखित संकलनों में संगृहित है ।

(1) झरोखा (2) दरीचा (3) वातायन

(4) झूला (5) गवाक्ष (6) जालक

(7) यात्रिक (8) आकाश (9) चरैवती

(10) कस्तुरी मृग (11) अमादेर शांतिनिकेतन (12) चार दिन की

(1) __झरोखा__ :- प्रस्तुत संकलन में कई रोचक संस्मरण प्राप्त होते हैं । इसमें कुल मिलाकर 25 संस्मरण हैं । इन सभी झांकियों की अपनी अपनी विशिष्टता है । "बांधीश ना आर मायार डोरे" "सत्यजीत रे" "भिजेना अंचरवा तोहार" तथा "वह अमर शिल्पी" संयुक्ता पाणिग्रही" जैसे व्यक्ति परक स्मृतियाँ भी है । "बांधीश ना आर मायार डोरे" के अंतर्गत अपने पति के साथ बीता अतीत व्यक्त हुआ है । कुछ मीठी झल-कियों से लेकर बिदा होने के अंत समय की स्मृतियाँ इसमें भरी

पड़ी है और जब पति का देहांत हो जाता है तो उनके शब्द पुन-रावृति करके कहते हैं कि, "बांधीश ना आर मायार डोरे ।"

सत्यजतीत रे उनके सहपाठी थे । इनके साथ बीती हुई कुछ मधुर घटनाओं का संस्मरण और उनकी फिल्मों के बारे में भी हुई कुछ चर्चा के संस्मरण "सत्यजीत रे" के अंतर्गत है । उसी प्रकार से "संयुक्ता पाणिग्रही" और "भिंजना अंचरवा तोहार" में नामी नृत्यांगना एवं संगीतज्ञों के संस्मरण हैं । "मैत्री का हाथ" "ओ रे गृहवासी" "जन्मदिन" "सिर फुटवा लो", "ऐ बूढ़े शेर", खूंखार आया" "वैभव प्रदर्शन", "ट्रेन डकैतियां, आदि संस्मरण दृश्य परक है । इन संस्मरणों को पढ़ते ही फिल्मों की भांति एक के बाद एक दृश्य बदलते रहते हैं और हमारी आंखों के सामने सजीव दृश्य उपस्थित होते हैं । यही इनकी कलम की सफलता है । "जन्मदिन" का एक ही दृश्य हम देखें कि - नैनीताल के एक रईस के प्रिय कुत्ते ज्योर्जी के "जन्मदिन" पर विशाल लोन में पार्टी का आयोजन किया था, अपने अपने कुत्तों के साथ कई सद्‌गृहस्थ उपस्थित थे लेकिन "एक पल में ही जैसे महाप्रलय हो गया, अतिथियों ने स्वामियों को खींचा, स्वामियों ने अतिथियों को, उधर मेजबान स्वामिनी को धकेल , मेज पर कूद सजे केक पर आरूढ़ हो गया । प्लेटें टूटी, हड्डियां बिखरी, बैरे चीखें और भौं-भौं के समवेत स्वरों की गूंज चीनापीक से टकराने लगी ।" [1]

इसके अतिरिक्त इस संग्रह में कई रोचक संस्मरण हैं जिनमें कई प्रतीकात्मक भी है । "परिवार नियोजन", औलाद और घोड़ा"

1 - झरोखा - पृ. 30

"मुखौटा" आदि जैसी रचनाएं प्रतीकों पर निर्भर है । प्रतीकों के द्वारा समाज के दुमुँही, ढोंगी लोग, तथा छात्र की कुछ योग्यताएँ समाज व देश की सेवा आदि उनके इन स्तंभ-लेखों से प्राप्त होता है ।

अपने विचार और अनुभूतियों को बड़े रोचक ढ़ग से प्रस्तुत किये हैं । "एक दिन माँ के भेजे फल उन दिव्य चरणों में अर्पित करने गई तो बाबा ने एकांत में लपक कर उसकी कलाई जकड़ ली ...... पुरुष की देह लोलुप दृष्टि को पहचानने में नारी कभी भूल नहीं करती । वह साहसी सुन्दरी किशोरी एक धक्के से उस सिद्ध बाबा को गिराकर हांफती-कांपती सीधी मेरे घर चली आई थी ।" 1

(2) दरीचा : यह संग्रह विशिष्ट संस्मरण एवम् विशिष्ट विचारों से समृद्ध है । इस संस्मरण संग्रह लिखने में भी शिवानी जी ने अपनी कलम तोड़ दी है ।

प्रसिद्ध गायिका-कलाकार बेगम अख्तर, विख्यात नृत्यकार रुक्मणी देवी, श्री जनार्दन कवि श्री सुमित्रानंदन पंत तथा बंगाली भाषा के प्रसिद्ध मुस्लीम कवि रजकल और हिन्दी के श्री भगवती प्रसाद बाजपेयी, आदि के व्यक्तिपरक संस्मरण भी इस संग्रह में उपलब्ध है ।

हिन्दी संस्था के साहित्यिक समारोह में श्री भगवती प्रसाद बाजपेयी, श्रीमती तेजरानी पाठक तथा जी.पी. श्री वास्तव

1 - झरोखा - पृ. 68

जैसे वयोवृद्ध साहित्यकारों से हुई भेंट का संस्मरण एक अमोल व्यक्तिपरक कृति है । इस प्रकार बंग संस्था की एक गोष्ठी में जब शिवानी जी को मुख्य अतिथि का निमंत्रण मिला तब वहाँ उपस्थित बंगला कवि जिनका नाम बंगला के प्रमुख कविवर रविन्द्र नाथ टैगोर के साथ लिया जाता है वे कविश्री नजरूल के साथ के संस्मरण भी चित्रित है । ईद के पर्व पर बेगम अख्तर के घर पर सेवई खाने जाना तथा अब्बासी साहब से हुई बातचीतों का संस्मरण भी बहुत सुन्दर शैली से प्रस्तुत किया है । "कला क्षेत्रम" द्वारा रूक्मिणी देवी से मुलाकात तथा श्री जनार्दन आदि के संस्मरण भी हैं ।

शिवानी ने उपन्यास एवम् कहानियों की भांति संस्मरण लेखन में भी विशिष्ट ख्याति अर्जित की है । इसलिए ही कवि श्री सुमित्रानंदन पंत ने कहा था - "तुम अधिक से अधिक संस्मरण लिखा करो, प्रत्येक चरित्र में तुम्हारी कलम प्राण फूंककर उसे जीवन्त कर देती है ।" 1

कुमाऊ का अपूर्व देवस्थल, ग्वालदेव, अलमोड़ा की काया-पलट एवम् तिवारी जी का सुविख्यात भोजनालय जैसे संस्मरणों के द्वारा सजीव दृश्य उदभवित करने की अप्रतिम क्षमता है । तिवारी जी की होटल का वर्णन शिवानी जी ने अपने उपन्यास "चौदहफेरे" में किया है । गर्म पूड़ियाँ, जंबू से छौंके आलू और पहाड़ी पीली ककड़ी के रायते के स्वादिष्ट भोजन के लिये और प्रवासियों के स्वागत के लिये तिवारी जी का भोजनालय प्रसिद्ध था । किंतु आज वह एक सपना बन गया है । अब केवल दालभात

1 - "दरीचा -" पृ. 2, "चार दिन की-" पृ. 9

चीकन आदि के लिये उपयुक्त है । अतः कभी ऐसा होता है-

"काश, तुम अभी भी बैठ पाते सिवाडी, तब शायद उन मेजों पर चावल और चिकन के ऐसे निर्लज्ज स्तूप न होते, न होती बीयर की बोतल । गर्म गर्म पूड़ियाँ थाली पर डाल शायद चपटे गोल चेहरे वाला पहाड़ी हंसमुख भृत्य पूछता -"और लाऊँ साब ?[1] शिवानी को एक दूसरा दृश्य देखकर भी बहुत दुःख हुआ वह है अलमोड़ा की कायापलट, वहाँ के लड़कों का छीछोरापन और छात्रों द्वारा निर्लज्ज वर्तन ।

दूसरा दृश्य शिवानी ने अपने और एक संस्मरण द्वारा उपस्थित किया है । दुर्लभ संत के दर्शन मात्र से शांति मिलती है तथा जिनको पोथीज्ञान नहीं है वैसे व्यक्ति विषम व्याधि से मानव को मुक्त कराने में कैसे समर्थ है इसका वर्णन भी उन्होंने किया है ।

कुमाऊँ का वह अपूर्व देवस्थल ग्वाल देव, जहाँ फरियादी अपनी अर्जियाँ छोड जाता है और वे देव दूध का दूध और पानी का पानी करके न्याय देते हैं । जहाँ खून, डकैती, फाँसी तथा विचित्र किस्सा बेटी को रांड करने के लिये आदि अर्जियाँ टाँगी जाती हैं । इसका भी रोचक संस्मरण - दृश्य उपस्थित करने का सफल प्रयास है ।

"रेपसीड ऑयल", रैगिंग", प्राचीन मुनि कश्यप", तथा होली और दिपावली के त्यौहार जैसे अनेक प्रतीकात्मक संस्मरण लिखने में भी वे सफल रही है । इन्कमटैक्स चुराने वालों तथा सूद

1 - दरीचा - पृ. 26

लेने वालों पर भी तीखा व्यंग है । जनता सरकार, मंत्रीओं की मनोहारी घोषणाएँ तथा हिमालय दुहिता पार्वती के जन्म की कथा भी "शिवपुराण" से लेकर प्रस्तुत की है और अपने विचार प्रस्तुत किये हैं ।

प्रतीकों के द्वारा यह उद्धृत करना चाहती है कि हमें मिलजुल कर रहना चाहिए संस्कारी वर्ताव से अपनी शिष्टता प्रदर्शित करनी चाहिए । "रैगिंग" जैसे पाश्चात्य शब्दों का मूल्यांकन उच्छृंखलता और स्वैर में नहीं करना चाहिए । वैदिक युग से त्योहारों का महत्व भाईचारा और एकता ही है । मुनि कश्यप जैसे लालची न बनकर दूसरों की सेवा करना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त दीर्घजीवन वार्धक्य, नारी के वार्धक्य के दो रूप जैसे अग्निगर्भा और मात्स्यपूर्ण आदि का स्तंभ लेखन भी सराहनीय है । इस प्रकार अनेक विशिष्ट संस्मरणों और विचारों से आप्लावित यह "दरीचा" संकलन अनुपम है ।

(3) "वातायन" : (1975)

वातायन अर्थात् खिड़कियाँ, ऐसी खिड़कियाँ, जो जीवन और जगत् की सच्ची मार्मिक तस्वीरें तो दिखाती ही है, साथ ही मनुष्य के अंतर में प्रवेश करके उनकी बारीक गुत्थियों को भी सुलझाती है । "वातायन" के द्वारा घर के झरोखे से देखते रहिए, जाने कितने दृश्य आँखों के आगे चलचित्र की तरह गुजरते जाते हैं, तरह तरह के लोग, तरह तरह की घटनाएँ । बिना पैसा-कौड़ी लिए हड्डी बिठाने वाला, चमचमाती मोटरों पर पोश

होटलों में महंगे डिनर खाते लोग, और बाहर एक एक दाने को तरसते भिखारी । न जाने कितनी पुरानी यादें, कितने कड़ुए अनुभव, जो रोज होते हैं, और इनके पीछे हैं लेखिका की गहरी संवेदना और अप्रतिम वर्णन शैली । ऊँचे अधिकारी अपने इन्द्रासन से हटते ही किस प्रकार नगण्य हो जाते हैं, छोटे-छोटे दफ्तरों के छोटे छोटे अधिकारियों के हाथों किस प्रकार प्रताड़ना सहते हैं, मृत पति की पेंशन लेने किस प्रकार एक महिला को कदम कदम पर हृदय हीन लालफीताशाही का सामना करना पड़ता है, ये सब अनुभव बड़ी मार्मिकता के साथ शिवानी के "वातायन" में मिलते हैं ।

इस संग्रह में कुल 33 रेखाचित्र व संस्मरण हैं । ज्यादातर रेखाचित्र ही है, जो लखनऊ के दैनिक "स्वतंत्र भारत" में प्रति सप्ताह प्रकाशित होते रहते थे ।

"आज जहाँ हमने अपने सभ्य जीवन को अनेक नवीन उपलब्धियों से समृद्ध किया है, वहीं अपनी संस्कृति की अनेक पुरातन उपलब्धियाँ गँवा भी दी है ।" [1]

महँगाई, गरीबी, नैतिकता मद्यपान, मानवता, नारी का स्थान आदि के रेखाचित्र बड़े अच्छे प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किये हैं । जो नारी वैदिक युग में देवी मानी जाती थी वह आज के युग में सभी मर्यादा व बंधन तोड़कर मानवी बन गई हैं । "ब्यूटी क्वीन" की सौंदर्य स्पर्धा में अपना शील, मर्यादा और विनय खो बैठी है । आज के युग में नारी को मातृत्व पसंद

1 - वातायन - पृ. 31

नहीं है । आया के भरोसे बच्चों को छोड़कर क्लबों या परदेश में घूमना अधिक अच्छा लगता है । अमरिकन अपने पालतू पशु-पक्षी के लिये अच्छा आहार, बीमा, सौदर्य प्रसाधनों के साधन विज्ञापन आदि में हजारों रुपयों के खर्च करते हैं लेकिन क्षुधा-युक्त मानव की ओर नहीं झांकते हैं ।

इस प्रकार अनेक प्रतीतों में लेखिका ने कई रेखाचित्र खींचे हैं ।

"ऐ महोब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया," और "कोयलिया मत कर पुकार" जैसी संवेदनशील गजल गायिका बेगम अख्तर तथा प्रख्यात संगीतज्ञ श्री द्विजेन्द्रनाथ सन्याल पर व्यक्ति परख रेखाचित्र भी चित्रित किये हैं ।

शिवानीजी ने अपनी जादुई कलम व शैली से कई दृश्य परख चित्र भी खींचे हैं जो फिल्म की भाँति हमारी नजरों के सामने उभरते रहते हैं । उनके तीन-चार संस्मरण पारलौकिक विश्व संबंधित भी हैं । अस्पताल में बुर्का पहनी तन्वंगी का इनके साथ चलना तथा नगर सेठ के इकलौते पुत्र का जहाज का हर पूर्णिमा की आधीरात को दिखना, ये दृश्य हमारी आँखों के सामने जीवंत हो जाते हैं । अपनी सखी मृत्यु के कई वर्षों के पश्चात् आकर नाश्ता करती है, विदेशी इत्र की खुश्बु से बर्तन भी सुगंधित हो जाते हैं । एक और संस्मरण भी है कि अपने पति के मृत्यु के पश्चात् एक बार नैनीताल में उनके पति के भिन्न मित्र और उनकी पत्नी मिले । लेखिका को वे घूमने ले गये बातें करते करते स्मशान में आ पहुँचे और इनको अकेली छोड़कर वे अदृश्य हो गये ।

इसके अतिरिक्त समाज सेवा के अनोखे प्रकार कुष्ठाश्रम में काम करने वाली डाक्टरनी, खद्दर के कपड़े पहन समाज सेविका का स्वांग करती महिला तथा बदनाम लड़कियों को उस बस्ती से निकालकर चरखा थमाने वाली औरत - इन तीनों समाज सेविकाओं के रेखाचित्र भी अजोड़ दृश्य परख हैं । कुमाऊ के कुली दोथ्याल का जीवन एवम् माल ढ़ोने की अनोखी छटा तथा गरीबी में भी खाना पकाने की अनोखी सूझ का रेखाचित्र भी अप्रतिम हैं । जैसे - नदी के पानी में से पत्थर लाकर मसाले के साथ पकाना, फिर पत्थर निकालकर फैंक देना - वही मसाले से मछली की खुशबु आना मानों मछली ही खा रहे हो ।

शिवानी ने इस संग्रह में तैंतीस रेखाचित्र लिखे हैं जो प्रत्येक अलग अलग दृश्य खडा कर देते हैं ।

अस्थीविसर्जन के लिये आये गरीब व अमीर लागों के साथ पण्डा का बरताव, तथा इस फरेबी युग की वैष्णवी के आश्रम की मुलाकात, जहाँ वैभव ही वैभव एवम् श्रृंगार व मसालायुक्त बादाम का दूध आदि भी देखने मिलता है और दिखावा सिर्फ गेरुआ ही गेरुआ है ।

सौराष्ट्र का मेला, नंदा देवी का मेला, बुन्देल खंडी कूडादेव मेला, पुराणो में विवरित उत्सव के चार प्रकार जैसे महोत्सव, समाजोत्सव, देवोत्सम, वृक्षोत्सव आदि का वर्णन व मेले की चहल पहल का दृश्य भी चित्रित है । बचपन के मेले के संस्मरण खिलौनों की स्मृतियाँ आदि संस्मरण सचोट दृश्य

उपस्थित करते हैं ।

बैंगलोर का चिक्पेट बाजार, साउथ परेड बाजार पुरातन बाजीगरों नट, सपेरों और कठपुतली के खेल हमारी नजरों के सामने जीवंत हो उठते हैं जैसे - बाजीगर जंमूरा के खेल में "फड़फड़ाते कबूतर को चादर से ढाक बंसी बजाता कभी पास धरी टोकरी में हाथ डालता, कभी बजाता कभी पास धरी टोकरी में हाथ डालता, कभी चादर में । अपने संदिग्ध आचरण से वह दर्शकों को निरंतर भ्रमजाल में उलझाता रहता, कभी दर्शक कहते, "छिपा दिया टोकरी में, तो वह भोले कन्हैया की मुद्रा में खाली टोकरी उलट देता ।" 1

इस प्रकार "वातायन" में शिवानीजी ने अनेक पहलूओं पर रेखाचित्र लिखे हैं और अपने संस्मरण भी प्रस्तुत किये हैं । विवाह के लिये अनेक रीतरिवाज तथा भोज और पात्रों की पंसदगी के लिये विचित्र प्रश्नावली, राजनीति, अराजकता, आंदोलन, दहेजप्रथा, आतंकवाद, तस्करी, समाचार पत्रों के विदिश प्रसारित "रागदर्शन" की झलक, स्ट्रींग फ्लैचर, मिनी मिकीनी बैलबौटम जैसा पहनावा, अनेक चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञ, आज की शिक्षा प्रणाली एवम् विद्यार्थी तथा होली, दिपावली इद जैसे त्यौहारों पर विशेष रूप से डाकियों की इनाम के लिये माँग आदि के रेखा-चित्र उपलब्ध हैं जो उनके प्राचीन संस्कृत साहित्य के ज्ञान और सुसंस्कृत व्यक्तित्व का एवं प्रतिभा का नया आयाम है ।

1 - वातायन - पृ. 18

(4) गवाक्ष : (1975)

शिवानी ने अपने संस्मरण एवं स्फुट लेखन लिखे जिनकी सच्चाई के कारण उन्हें अनेक दुविधाएं भी आयी हैं । इन्होंने जो कुछ लिखा है वह सत्यता पर ही निर्भर है । इनके शब्दों में ही देखें - "अपनेही गवाक्ष के सीमित औदार्य से जितना कुछ मैंने देखा और जिसने मुझे झकझोरा उन्हीं घटनाओं को ईमानदारी से लिपि बद्ध करने की इस चेष्टा में, मैं कहां तक सफल रही हूँ यह मैं नहीं कह सकती किंतु कभी कभी मुँह फट लेखनी के दुःसाहस ने मुझे संकट में डाला अवश्य है ।" 1

इस संग्रह में कुल 21 संस्मरण एवं निबंध संगृहित है । अधिकतर प्रतीकात्मक निबंध एवम् लेख प्राप्य है । संस्कृति, भाषा, कला, अभिनय, यात्रा तथा सामाजिक समस्याओं आदि पर स्वतंभ लेखन लिखने का सफल प्रयास है ।

"गवाक्ष में भी द्युतक्रीड़ा में सब कुछ हार कर अपनी सुन्दरी युवा पत्नी को दाव में हारने वाले जुआरी, भूत प्रेत की हवेली में लेखिका के प्रत्यक्ष अनुभव, ठग की विद्या में चातुरा नारी के प्रसंग, सरोजिनी के साथ बीती घड़ियाँ एवम् पिता की हत्या करने वाली निर्दोष अपराधिनी आदि के संस्मरण चित्रित हैं ।

रविन्द्रनाथ ने नारी के दो रूप बतलाये हैं, प्रिया या जननी, प्राचीन नारियों में जो पति के लिये त्याग भावना थी और जननी बनकर रहती थी वह आज नहीं है । आज प्रिया का रूप ही अधिक है । बड़े रोचक ढंग से इन्होंने

1 - "गवाक्ष" - प्राक्कथन - शिवानी

नारी पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं । इस क्षेत्र में पुरुष की बराबरी करने वाली और समान अधिकारिणी पाश्चात्य की तरह आज छोटी सी बात से भी तलाक के लिये अदालत के द्वार, खटखटाती है । आम तौर पर आज नारियों की स्थिती के लिये नारी ही जिम्मेदार है । मौलाना के उदाहरण के द्वारा लेखिका का कहना यही है कि पुरुष को विचलित करने के लिये नारी ही अनेक प्रलोभन प्रस्तुत करती है । आधुनिक विचारधारा के आंचल में पाश्चात्यता अंगीकार हो जाती है । पहले के जमाने में केवल सखियों के साथ घूमना-फिरना होता था किंतु आज आधुनिक विचारधारा से सखी के बदले सखाओं की संख्या में घूमना अधिक होता है । इसी कारण से ब्याह से पहले माँ बनना भी सामान्य हो गया है । लेखिका ने स्फूट विचार बड़े गहन यथार्थ और दार्शनिक है ।

गांधीजी ने लिखा है स्त्री अहिंसा का अवतार है । लेकिन स्त्री कभी कभी ऐसी हिंसक भी हो सकती है जिसका दृश्य परख संस्मरण शिवानी जी ने यहाँ लिखा है । सत्रह - अठारह वर्षीय तरुणी को नौकरी के बहाने लाकर मारपीट कर जबरन् बीबी बच्चे वाले नौकर के साथ ब्याह करवाने के लिये भी प्रयत्न किया जाता है ।

इसके अतिरिक्त कई व्यक्ति परख संस्मरण भी इस संग्रह में प्रस्तुत है । आज के संगीत से उब जाने वाले लखनौ के संगीत प्रेमीओं के लिये 1975 में बेगम अख्तर की स्मृति में एक बहुत अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ जिसमें नूरजहाँ, मुबारक बेगम, अन्वर, भूपेन्द्र, कृष्णा आदि कलाकार पधारे थे । जिन्हें एक पियक्कड़

के चुटकुले के द्वारा लेखिका ने प्रस्तुत किया है । रविवार रात को चित्रपट संगीत में "रागदर्शन" का कार्यक्रम प्रसारित होता है । मन्नाडे, भीमसेन जोशी एवम् लता मंगेशकर के शास्त्रीय गीतों का संस्मरण भी एक वैयक्तिक व अनुपम है ।

लखनऊ में संगीत एवम् नृत्य का दो दिन के लिए एक अनुष्ठान किया गया । जिसमें रविशंकर के शिष्य और बम्बई आकाशवाणी के सितार वादक कार्तिक कुमार, तबला वादक जेरी मसा तथा युवा कलाकार मालिनी जो हैदराबाद आकाशवाणी केन्द्र की कलाकार थी, वे उपस्थित थे । मालिनी ने आत्म-विश्वास से विशिष्ट पाण्डित्य पूर्ण कला प्रस्तुत की । ग्वालियर घराना की होते हुए भी अन्य घरानों की मिलावट बड़ी चतुराई से की और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया । यामिनी कृष्ण मूर्ति ने भी भरतनाट्यम् की निपुणता प्रस्तुत की । इस प्रकार वैयक्तिक संस्मरणों में शांति निकेतन की भूतपूर्व छात्रा एवम् अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बातिक कला की कलाकार प्रभा पंवार के संस्मरण भी है जो "युवामहिला कांग्रेस" द्वारा आयोजित शिल्पकला प्रदर्शनि में प्राप्त हुए ।

शासक वर्ग, प्लैटों का जन जीवन, होली, दीपावली उत्सव जिसका उल्लास महंगाई होते हुए भी जैसा का वैसा ही है किंतु होली जैसे पर्व पर घटती अश्लिलता आदि का वर्णन भी, "गवाक्ष" में मौजूद है । "विश्व महिला वर्ष" पर लिखे निबंध में नारी जो अपनी शालीनता गँवा बैठी है इसके बारे में भी कहती है कि - "आज वह प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है, भले ही उस खडे होने में उसे हाथ में "छोटा

पग" थामना पड़े या बंदूक । नारी जीवन की सार्थकता केवल कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने में ही नहीं है, कंधे का सहारा लेने में भी है । " 1

"गवाक्ष" में ही एक अनोखा दृश्य परख बृहन्नलाओं की मुलाकात भी है । एक रेल यात्रा के दौरान शिक्षित व अंग्रेजी पत्रिकाएँ पढ़ती तथा आत्मीयता एवम् लेखिका के पति के साथ सिर पर आँचल खींच एक दामाद सा व्यवहार, बच्चों को शुद्ध घी का हलवा खिलाकर सुलाना और सजल नेत्रों से विदा करना एक अनोखा संस्मरण है । जिन्हें हम विवाह-जन्मोत्सव पर देखते हैं और भिन्न तौर-तरीके व अश्लील-असंतुष्ट हरकत करते देखते हैं वही बृहन्नला क्या ऐसी जनानी हो सकती है ?

{5} झूला : {1979}

"झूला" में शिवानी के कुछ बहुत ही रोचक संस्मरण, रेखाचित्र और लेख हैं, जिनमें लेखिका ने बड़ी आत्मीय" शैली से जहाँ एक और संगीतज्ञों और साहित्यकारों के संबंध में लिखा है वहीं दूसरी और जीवन के आस पास बिखरी सामाजिक समस्याओं को एक नई दृष्टि से देखा-परखा है । इस संग्रह में 17 संस्मरण एवं रेखाचित्र हैं । लेखिकाओं की संस्था, लखनऊ में आयोजित अनेक संगीतकारों के कार्यक्रम, राईनृत्य, नैतिक एवम् आध्यात्मिक दृष्टि, दहेज तथा पथभ्रष्ट छात्रों के लिये लखनऊ दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रम आदि के विषय में शिवानी ने संस्मरण . रेखाचित्र तथा लेख लिखे हैं ।

1 - "गवाक्ष" - पृ० 22

पं. रविशंकर, पं. शिवकुमार शुक्ल, बुद्वादित्यजी ज़ाकिर हुसेन, बिरजू महाराज, किशन महाराज, पं. अमरनाथ गिरिजा-देवी, भीमसेन जोशी तथा गंगुबाई हंगल आदि के वैयक्तिक रेखा-चित्र भी बड़ी सफलता से लिखे हैं ।

दृश्य-परख संस्मरणों का चित्रण भी बड़ी रोचकता से किया है। जैसे कि इमरजन्सी के दौरान एक मुस्लीम सराफ को अपना धन सौंपा था । मुस्लीम ने जामून के पेड़ के नीचे गाड़ दिया था किंतु मिल नहीं रहा था लेकिन अपनी पत्नी की चातुर्यभरी सहायता से वापस मिल जाता है । इसका बडे रोचक ढंग से वर्णन किया है। साईंबाबा के आश्रम की सात-आठ हजार की भीड़, स्ट्रेचरनुमा खटिया में लेटी पंगु पुत्री एवम् इन्दौर से आये सरदारजी की सिसकियाँ, होली के पूर्व पर औरछा के किले में आयोजित गुल-बिरा का राई नृत्य जिसमें लेखिका द्वारा घूंघट हटाने से बेहोश होकर गिरना आदि का संस्मरण भी बहुत ही सफलता से एवं रोचकता से प्रस्तुत किये हैं । रविन्द्रालय के संगीत जलसों के संस्मरण वाकई सुन्दर हैं । किराना घराना के पं. भीमसेन जोशी गंगूबाई हंगल आदि के मधुर कंठ एवम आलाप, तान खटका, मुर्की जैसी विद्वता का वर्णन तथा बुद्वादित्यजी और धर्मवीर सिंह का सितारवादन, पं. शिवकुमार का संतूर वादन आदि के कला की विद्वता चित्रित है ।

उत्तर प्रदेश संगीत नाट्य अकादमी ने कुमाऊ नी संगीत नाटिका, "मालूशाही" का मंचन किया था, जिसमें वेशभूषा, संगीत पात्र-पात्राओं क चयन आदि जैसी कई त्रुटियों को देखा गया इसके अतिरिक्त श्रेष्ठ मूर्तिकार अवतार सिंह पंवार के प्रदर्शनी में प्रस्तुत

क्रुद्ध वृषभ एवम् क्रुद्ध मुर्गी के चित्र आदि के बारे में भी शिवानी ने इस संग्रह में लिखा है । सुविख्यात गायिका गिरिजादेवी के 15 वर्ष की आयु में पत्नी व चार पुत्रों के पिता संगीत प्रेमी मधुसुदन से ब्याह हुआ । विवाह के पश्चात् यह जानकर भी किस प्रकार से प्रचुर मात्रा में ख्याति अर्जित की तथा विधाता की प्रवंचना को स्वीकार कर पति के मृत्यु के बाद भी सेवा में व संगीत साधना में अपना जीवन व्यतीत करती हुई कलाकार का रोचक व सफल रेखाचित्र खींचा गया है ।

संस्मरण तथा रेखाचित्र के अतिरिक्त उन्होंने कई निबंध भी लिखे हैं । आधुनिक आध्यात्मिक एवम् नैतिक दृष्टि तथा जीवन का मूल्य स्त्रियों के समानाधिकार, संघर्ष, हड़ताल, दहेज आदि के विषय में भी उनके विचार प्रशंसनीय है । आज किसी में भी श्रोता बनने का संयम नहीं किंतु वक्ता बनने तैयार हो जाते हैं । संसद सदस्या के उदाहरण से वे कहती हैं कि कृषक कर्मी सम्मिलन में अल्पज्ञानी वक्ता ने रविन्द्रनाथ, बंकीमचंद्र, शरतचन्द्र आदि पर दोषारोपण किया । वाकई आज हम दिशा भूल चूके हैं । बंदी होने के पश्चात् औरंगझेब को लिखे पत्र का उदाहरण सिद्ध है ।

"धन्य है हिन्दू जाति जो मृत पिता को भी पानी देना नहीं भूलता और एक तू है जो जीवित पिता को भी पानी देना नहीं जानता ।" 1

{6} जालक : {1979}

प्रस्तुत संग्रह में 27 संस्मरण व रेखाचित्र लिखे हैं ।

1 - झूला - पृ. 55

वैसे सभी संस्मरण निजी है । अपने भाषा कौशल, स्पष्ट चिंतन और पैनी दृष्टि से, शिवानी ने आम जीवन के प्रसंगों को "जालक" के माध्यम से एक सांस्कृतिक तथा स्थायी मूल्य देकर साहित्य के इतिहास में अमिट बना दिया है । यहाँ पर समाज व्यवस्था, सरकार, पास पड़ौसी, और उनके प्रसंग अभिव्यक्त हुए है ।

सिर्फ नीचला धड़ और निष्प्राण मांस-पिंड वाली अपाहिज चंन्द्रा, जिसकी अनेक महत्वकांक्षाएँ है ।

लखनऊ की यात्रा के दौरान कुंअर साहब से मुलाकात सम्राट अशोक का प्रिय "मोर का गोश्त" खाने का आग्रह, सुस्वाद भोजन जैसे व्यक्ति परख संस्मरण हैं । श्रीमती घोष की डकैती, भारत की सर्वप्रथम महिला डोक्टर आनंदी ये भी वैयक्तिक एवं रोचक संस्मरण हैं । अंग्रेजी की मोह में मुह लगे बेटे का जीवन संस्कृति व संस्कार विहिन बनाना और जन्म से संस्कार कभी नहीं जाते ये बात पाँची बाई के पात्र द्वारा सिद्ध करना तथा उद्दंड "छोकरे" द्वारा लेखिका से मुठभेड़ जैसे दृश्यात्मक रेखाचित्र भी प्रस्तुत है । सिर्फ रस्सी के माध्यम से ही पर्दे के पीछे स्थित मरीज़ है या अन्य पशु है ये बतलाने वाले निष्णांत वैद्य व हकीम भी भारत में पैदा हुए हैं । पुलिस और गुनहगार, नादू जैसे गुरु आदि के भी एक अनोखे संस्मरण हैं । नैमिषारण्य की महत्ता, सौन्दर्य, आदि के बारे में भी रोचक संदर्भ लेखन प्रस्तुत है । दधीचि ऋषि ने सब तीर्थों का आहवान कर अपने शरीर पर दही एवं हल्दी लगा कर गायों से चटवा कर शरीर का त्याग किया और अपनी अस्थि देवताओं को समर्पित की । महाबलीपुरम, मद्रास का पर्यटन, वहाँ

के लोग, मातृभाषा की प्रियता आदि का व्यंग्यपरक वर्णन है । सरकार की कर्मठता, सत्तारूढ़ आदमी, आंतरिक असमानता, स्वार्थ, शासक के प्रति क्षणिक मान, आधुनिक चीजों के प्रति लगाव आदि बातों पर भी अनेक कटाक्ष एवं रोचक प्रतीकात्मक संस्मरण मौजूद है । "प्रख्यात चीन दार्शनिक कोन्फूशियस ने भयावह जंगल में झोपड़ी बनाकर बैठी वृद्धा से पूछा, यहां भयावह बाघ है, तुम झोपड़ी बनाकर यहां क्यों बैठी हो ? वृद्धा ने कहा – यहां बाघ अवश्य है किंतु कोई राजा नहीं है, इससे निरापद स्थान और मुझे कहां मिल सकता है ? – इस उदाहरण व प्रतीकों द्वारा आज की राजकीय परिस्थिति निर्दोष प्रजा की अवस्था आदि निर्दिष्ट करती है । हेनरी के पात्र द्वारा चाहे वे भारत छोड़कर चले गये किंतु एक अच्छे आदमी की कद्र करना नहीं भूलते ये अंग्रेजीयत का शिस्त है इस बात को व्यंग्यात्मक संस्मरण से बतलायी गई है । वे मृत्यु पर्यन्त हर माह अपने भारतीय ड्राइवर को 200 रूपये भेजते रहे ।

इस प्रकार देश, समाज और परिवार से संबंधित 27 संस्मरण इसमें संग्रहित है ।

§7§ यात्रिक : §1981§

देश विदेश की यात्रा बहुत लोग करते हैं । जिसमें सबकी अपनी अपनी अलग प्रतिक्रियाएँ होती हैं । शिवानीजी ने जो यात्रा की है, वह अपने ढंग की अनूठी यात्रा है । उनकी संवेदन शैली ने जो प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की है यह कई दृष्टि से दूसरों के लिए भी अविस्मरणीय और चौंकाने वाली हो सकती है । "यात्रिक"

शिवानी का एक ऐसा यात्रावृत है जिसमें कथारस, संस्मरण की महक एवं रेखाचित्र की जीवंत मूर्तिमत्ता भी है । यह विदेशी वातावरण में परिवर्तित भारतीय रीति-रिवाजों की मनोरंजक झांकी प्रस्तुत करता है ।

विदेशी भूमि पर देशी रंगढंग का ब्याह कराने शिवानी अपने पुत्र की बारात लेकर इंग्लैंड गई । इस अनूठी यात्रा में उन्होंने जो देखा-परखा, अनुभव किया उसे वृतान्त का रूप दे दिया है ।

शिवानी भारत से विदा हुई, कस्टम अधिकारियों से पाला पड़ा और सिर्फ बटुआ हिलाती बारात लेकर गई । लंदन स्थित मित्र की सहायता से उनकी जान में जान आयी । वहां पंडितजी का विवाह मंत्रों का अनुवाद करके सभी को प्रसन्न करना, लंदन के अनेक किस्से सुनना तथा कई स्थलों की मुलाकात के संस्मरण हैं । लंदन स्थित भारतीय परिवारों की मुलाकात अपने पेशे और अन्य समस्याओं के रोचक संस्मरण प्रस्तुत है । शिवानी ने अनेक प्रसिद्ध रेस्टोरन्ट, डिपार्टमेन्टल स्टोर, म्युझीयम, कोहिनूर प्लेनेटोरियम, एवम् प्रसिद्ध शील्पकार ने बनाई हुई अनेक प्रसिद्ध मूर्तियां देखी । अनेक मनोहारी स्थल एवं सुविख्यात टावर तथा केंब्रिज का गहन शान्तिपूर्ण विद्यालय देखा ।

यह एक अनुपम यात्रावृत्त है अत: यात्रा कावर्णन अधिकतम है और कई कई जगह पर व्यक्ति विशेष की छाप है इसके अतिरिक्त दृश्यात्मक अधिकतर है ।

यात्रा के दौरान आते-जाते दोनों समय पर अलग अलग

सहयात्रिणियों से मुलाकात हुई और अपने निजी प्रसंग व पारिवारिक चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ । लंदन के परिवेश में भी शिवानी जी भारतीय संस्कृति की अनोखे संस्मरण छोड़कर भारत लौटी ।

§8§ "चरैवति" §1987§

चरैवति ! चरैवति !... अर्थात् चलती जा, चलती जा । जीवन में कभी नहीं रुकना । निरंतर चलते चले जाना है और जहाँ भी जो मिल जाए, उस से अपने ज्ञान की गठरी को भरते ही जाना है । ज्ञान कभी नहीं सूखने वाला स्रोत है । यही संदेश दिया है शिवानी ने "चरैवति" में, जो वैसे तो रूस यात्रा का रोचक वृतांत है, लेकिन मूल में विश्व मानवता, भाईचारे और आपसी सद्भाव की प्रेरणा देता है । मोस्को के बाद साइबेरिया की यात्रा बेहद दिलचस्प और ज्ञानवर्द्धक है । इसमें रूसी लोगों के जीवन, आचार-व्यवहार के साथ साथ प्रसिद्ध स्थलों और नैसर्गिक सौंदर्य का सरल कथात्मक वर्णन है ।

इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ में अपने क्षेत्रों में प्रसिद्ध महिला और पुरुषों के जीवंत रेखाचित्र शिवानीजी की कथा कहने की क्षमता को और भी स्पष्ट करते हैं ।

"चरैवति" एक दृश्य परख संस्मरण है जिसमें मोस्को के प्रशस्त हवाई अड्डे से लेकर भारत लौटने तक के संस्मरण प्रस्तुत हैं । मोस्को के हवाई अड्डे के सामने हमारे देश आंतरराष्ट्रीय अड्डा किसी बालक के खिलौने सा प्रतीत होता है । शिवानीजी गुरुवर रविन्द्रनाथ की 125वीं जन्मतिथि में भाग लेने डॉ. निमाई तथा बंगला

की प्रख्यात लेखिका मैत्रेयीदेवी के साथ प्रतिनिधित्व कर रही थी । वहाँ स्वस्थ एवम् चौड़ी सड़कें जिस पर एक साथ सौ-सौ मोटर कार बड़ी आसानी से गुजर सकती है । मोस्क्वी नदी जो मोस्को को चारों ओर से बांधती धीर मंथर गति से बहती है जिसमें रात देर तक भ्रमणार्थी नौकाओं में घूमते दिखाई देते हैं । रात को भी सूर्य माथे पर चमकता दिखाई देता है, इन सबकी स्मृतियाँ भिवानीजी ने उद्घोषित की हैं । निरामिष होने के कारण सिर्फ आइस्क्रीम और साईबेरियन सैलाड खाकर दिन गुजारने पड़े । वहाँ लेनिन म्यूज़ियम, गोर्की म्यूजियम, मोस्कों का लोकप्रिय रेस्तराँ जलतरंग, साईबेरिया म्यूज़ियम, कुम्पोठ कोटेज जिसमें आत्मीय परिवार सा व्यवहार आदि के रोचक संस्मरण हैं । साईबेरिया में समुद्रसी विश्वविख्यात निर्मल "बैकाल झील" का वर्णन है, जिसके पानी में लोग नौका विहार करते हैं और गंगाजल की तरह बोटल भर ले जाते हैं । इसकी स्वच्छता-निर्मलता का प्रमाण यह है कि इसके पानी में नन्हा कोपेक का सिक्का डाल दें तो तीन मील की गहराई तक धंसता दिखाई देता है । इसकी गहराई 1620 मीटर है । अन्य एक संस्मरण है साईबेरिया के संग्रहालय का जो उजड़ी बस्ती में, बिखरे अवशेष सा भारतीय किसी गाँव सा था । बड़े बड़े पत्थर के स्तूपों को गर्म कर पानी डाल कर उसकी भाप की गर्मी से महिलाएँ बच्चों को जन्म देती, वह अनोखा स्थान भी देखा ।

रूसी के हृदय में "टैगोर" के लिये आदरणीय स्थान है । वहाँ नैतिकता का स्तर हमसे ऊँचा है । अपराध बहुत अल्प प्रमाण है क्योंकि अपराधी को कड़ी शिक्षा मिलती है, चाहे वह अमीर हो शासक हो या सामान्य नागरिक हो । शिवानीजी सोचती है प्रतिवर्ष कितने ही शिष्ट मंडल विदेश से लौटकर क्या लाते है, वी॰सी॰आर॰ कैमेरा, उपहार आदि ? प्रयोजन की सार्थकता कहाँ तक । शिवानीजी बहुत कुछ लेकर प्रत्यागमन करके कहती है - "अभी तो गठरी आधी ही भरी है मूर्ख । अभी इसमें बहुत कुछ भरना है । भरना है तो स्वयं अपनी क्षमता को तोल और चलती जा । चलती जा । । चरैवति । चरैवति । ।

व्यक्तिचित्र : "चरैवति" में निम्नलिखित व्यक्तिचित्र भी हैं ।

§1§ भारतीय शिल्पजगत आचार्य नंदलाल बोस - जिनके मार्गदर्शक स्वयं गुरुदेव थे ।

§2§ श्री प्रभात कुमार मुकर्जी - शिवानीजी के इतिहास शिक्षक।

§3§ जया - चित्रकार सहाध्यायी

§4§ मृणालिनी साराभाई - सहाध्यायी एवम् नर्तन कला क्षेत्र में अग्रण्य

§5§ रघुनाथ सेठ - वंसीवादक एवम् संगीत निर्देशक

§6§ बिहार की विख्यात गायिका विंध्यवासिनी - साहित्य एवम् संगीत में प्रचुर ख्याति अर्जित की है । लोकशब्दों का बृहत कोश "लोक शब्द सागर" की सम्पादिका भी है । पद्म श्री अवोर्ड से विभूषित है ।

अन्य रचनाएँ :

"चरैवति" में ही शिवानीजी ने अन्य रचनाएँ लिखी हैं । जैसे कि – दहेज विरोधी नारियों के विषय में, नारी जागृति । नशे की गोलियों से होती सुखी परिवार की बरबादी । उन्नति का लिये दावा करना, किंतु देश का एक अछूता वर्ग जो अभी भी अभिशाप्त है । जापानी युवा वर्ग में प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं के कारण भय से अनेकों की आत्महत्या । "विशनुली" की रचना के कारण अपने ही गुरु पर कीचड़ उछालने का इल्जाम । अपनी जन्मभूमि नैनिताल के मंदिर में तस्करों द्वारा चोरी तथा सब कुछ बदला हुआ । ननिहाल के संस्मरण आदि ।

{9} कस्तुरी मृग : {1987}

कस्तुरी मृग लघु उपन्यास है । इसके साथ ही "भूलभूलैया" से संकलित अनेक रचनाएँ एवं संस्मरण है । ये रचनाएँ छोटी छोटी जो समाज और लोगों की जिंदा तस्वीरें प्रस्तुत करती है । जिंदगी की ढेरों समस्याएँ जो यथार्थ है इसे यहाँ चित्रित की गई है ।

अब धीरे धीरे मानवी बदल रहा है, उसकी मनोवृत्तियाँ, प्रतिक्रियाँ, रुचि आचार विचार आदि बदलता चला है उसी प्रकार से प्रकृति भी अपना पैंतरा बदल रही है । पहाड़ों में भी पूस-माघ की विभावरी में अब उतनी ठंड नहीं रही जितनी पहले हुआ करती थी । जाड़े की ऋतु, बर्फ और शीत की झाँकिया दृश्य परख संस्मरण है । कटे पुल के नीचे रहती वस्त्रहीन पगली जो राक्षस से रामबदन" युवक से ब्याहकर गृहस्थी बनाती है और फिर एक दिन वैसी ही अवस्था में वापस आ जाती है । आते जाते पुरुष फिर से उसे छेड़ते हैं । ये भी एक रोचक दृश्य परख संस्मरण है जिसमें पुरुष की लोलुपता दृश्यमान है ।

लंदन में भारतीय मिष्टान्न कितने प्रसिद्ध है कि सारा परिवार इस कार्य में व्यस्त होने पर भी माँग को पूरी नहीं कर सकते। लंदन से सिर्फ डेढसौ मील की दूरी पर नव पाषाण कांस्य-युग का एक ऐसा दर्शनीय स्थल है जो कांस्ययुग के अवशेष को अभी तक संचित रखकर स्थित है। इसके अतिरिक्त लंदन की राजनीतिक बयार में श्रीमती थैचर की अनेक परेशानियाँ तथा फैशन की राजनीति और राजनीति के फैशन . जैसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक तथा दृश्यपरख रचनाएँ इस संग्रह में सम्मिलित है।

आज के अतिसुविधा वादी समाज की विडम्बना यह है कि जिस अपराधी ने 16 हत्याएँ की है ऐसे अपराधी को भी मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर मुक्त किया जाता है। भौतिक सुखों के पीछे भटकने वाले भारतीय रत्न तथा नारी शिक्षा, व विवाह की अनिवार्यता आदि के विचार भी इस संकलन में हैं।

लंदन में किसी भी मौत पर अवदशा होती है। स्वजन के श्मशान के लिये भी रीजर्वेशन होता है। और यहाँ तक कि हमें स्वजन के पास जाने की स्पर्श करने की या श्मशान जाने की भी इजाजत नहीं मिलती। जब कि हमारे यहाँ स्वजन की मृत्यु पर उसे बड़ी आत्मीयता से सजा कर जूलूस निकाल कर राम नाम के साथ श्मघट ले जाते हैं। ऐसे सांस्कृतिक लिंगपुराण के आधार पर लिखी गयी यह रचना भी संलग्न है।

इसके अतिरिक्त गुरुदेव के आदेश से शांतिनिकेतन में छात्रावास की वार्डन फ्रेंच युवती का व्यक्तिपरख संस्मरण भी सम्मिलित है।

इस प्रकार अनेक छोटे मोटे संस्मरण तथा विचार इस संकलन में प्रस्तुत है।

§10§ आकष §1984§

आकष एक अनोखा संग्रह है, जिसमें ललित निबंध, कतिपय रेखाचित्र एवम् संस्मरण संगृहित हैं । इसके अंतर्गत 17 रचनाएं है । प्रारंभ में कृष्णकुमार श्रीवास्तव द्वारा शिवानीजी के बातचीत की प्रस्तुति है । भाषा, भारतीय संस्कृति; गुरुजनों एवम् आंचलिक उपन्यास के बारें में शिवानीजी के प्रश्नोत्तरी है । लंदन यात्रा, अन्य कथाकार जैसे मन्नू भंडारी, मालती जोशी; उषा प्रियंवदा आदि के लिये भी अपने विचार प्रस्तुत है ।

ललित निबंध के अंतर्गत "भ्रष्टाचार", "जापान की समृद्धि का रहस्य", "नारी ही नारी का शत्रु", "साहित्यिक क्षेत्र में महिलाएं, "कुरुष्व मुनि शार्दुल तथा मां चिरजीविनम्" आदि समाविष्ट है । जिसमें उनके नीजी अनुभव, दीर्घ अभ्यास, और लेखनी की अनोखी छटा देखने मिलती है । "सारंगी सम्राट बैजनाथ मित्र, संगीतज्ञ पं. कृष्णराव शंकर पंडित तथा कृपाल दत्त त्रिपाटी जैसे महान शिल्पी आदि से साक्षात्कार की बातें तथा वैयक्तिक रेखाचित्र प्रस्तुत है ।

बम्बई जैसी सुहावनी नगरी में, जहां फैशन व रौनकता ही व्याप्त है वैसी नगरी का, खोखलापन भी यहां "बम्बई की ताजी छाप" में देखने मिलता है । जहां तनिक भी प्रेम, दया, शिष्टता आदि कुछ नहीं है । हर जगह पर आशंकित चेहरे, कर्मचारियों की हड़ताल, असुरक्षा सामाजिक खाई, तरुणों की नशेबाजी आदि देखने मिलता है । इसके अतिरिक्त पूरे सुहावने शहर में कलंक रूप अस्वच्छता जैसे अशिष्ट रूप से जहां तहां दिशाजंगल जाना ये है ।

शिवानी जी ने बड़े भावुक होकर "नन्ही नन्ही बुँदिया रे सावन का मेरा झूलना" तथा आसान है माँ का ऋण चुकाना," जैसे संस्मरण भी लिखे हैं ।

"कच्ची नीम की निबौरी, सावन कब आवेगो ?
बाबा दूर मत दीजो हमकू, कौन बुलावेगो ?

उक्त अवध झूलागीत गाती, झूले के पेंग में झूलती नारी कभी भावुक प्रेयसी, कभी पतिव्रता अर्धांगिनी, कभी स्वयंदूती तो कभी विप्रलंभा । कभी सौत से दु:खी तो कभी मायके की भाभी से, कभी कठोर सास से दु:खी झूलती हुई गाती है । यहाँ पर बुंदेलखण्डी सावनी मल्हार, उत्तरप्रदेश का झूला गीत, आगरे की चंद्रावली का झूलागीत आदि का वर्णन किया गया है एवम् अपने अतिथि के संस्मरण भी लिखे हैं । शांतिनिकेतन में हजारी प्रसादजी के द्वारा झूला बाँधना तथा गाना -

"हिंडोलना झूलन चली बालमारे,
जब रे हिंडोलवा की चली रे पेंगवा
चुनरिया फररर, पवनवा सररर होय रे बालमा" ।

दोलोत्सव के लिये भी रविन्द्र संगीत में झूलागीत आदि के व्यक्तिगत संस्मरण हैं । "जूनू तो थयु रे" के अंतर्गत भी व्यक्तिगत संस्मरण है । जहाँ वैष्णवी के पति के पुनर्जन्म की कथा प्रस्तुत है ।

जिसने अपनी सभी संपत्ति, व सर्वस्व लुटाकर अपने बेटे को बड़ा किया किंतु परदेशी होकर पत्नी और पुत्र द्वारा अपनी

वृद्ध माँ को त्रस्त किया तथा माँ का ऋण चुकाने के लिये उसे काशी के वानप्रस्थाश्रम में छोड़ आया । क्या आसान है माँ का ऋण चुकाना ? इस मैत्री एव वैयक्तिक संस्मरण से अपने विचार बड़े रोचक ढ़ग से प्रस्तुतत किये हैं ।

इस प्रकार "आलोक" में कई गहन, विचारशील व रोचक निबंध व संस्मरण संगृहित है ।

(11) आमादेर शांतिनिकेतन : (1986)

यह एक सर्वोत्तम कृति है । इस संग्रह में गुरुपल्ली, आश्रम के पर्व, आश्रम के विकास में गुरुदेव का योग, अनेक विभूतियों का आगमन, गुरुदेव की आत्मीयता आदि मिलाकर कुल 15 संस्मरण हैं । शांतिनिकेतन में अनेक छात्र और अध्यापक रह चुके हैं कितनों ने ही इस संस्था के बारे में संस्मरण लिखे हैं किंतु शिवानी ने अपनी कुशलता से अनेक मनोहर झाँकियाँ पाठकों के सामने प्रस्तुत की है । श्री बनारसीदास चतुर्वेदीजी ने लिखा है कि " "आचार्य श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी इस विषय पर काफी लिखा है..... पर अब तक शांतिनिकेतन के विषय में जितने लेख मेरे पढ़ने में आये हैं उनमें श्रीमती शिवानी की यह पुस्तक मुझे सर्वोत्तम जँची ।" [1]

गुरुपल्ली" में अनेक व्यक्तिगत संस्मरण हैं । सभी गुरूजनों के साथ घटी घटनाएँ, शरारती छात्रों की शरारतें, गुरुओं का छात्रों के प्रति वात्सल्य तथा छात्रों का आदरभाव आदि प्रस्तुत किया गया है ।

1 - आ॰ शांतिनिकेतन भूमिका पृ॰ 7

शांतिनिकेतन में मनाये जाने वाले अनेक उत्सव एवम् पर्वों आदि के कई दृश्यात्मक रोचक संस्मरण हमारी नजरों के सामने आ जाते हैं । वर्षा के दिनों में भीगने की छुट्टी रहती थी इसका मनोरंजन पूर्ण वर्णन है तथा आलू- पराल के रोचक किस्से भी प्रस्तुत है । एक विदेशी शिक्षित राजपूत्र के विवाह के विज्ञापन का उत्तर देने के लिये शरारती छात्राओं का पराक्रम तथा डॉ॰ ऐरन्सन का शेक्सपियर पढ़ाते समय शैतानी छात्र का जेब से सांप निकाल कर शरारत करना आदि अनेक रोचक व मनोरंजक संस्मरण शांतिनिकेतन के वातावरण की पवित्रता और गुरु शिष्य की स्वतंत्र भावना तथा वात्सल्य को प्रदर्शित करते हैं ।

गांधीजी, कस्तुरबा, राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद, मार्शल चांग काई, नेहरूजी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, सुभाषचन्द्र बोस आदि अनेक विभूतियों ने इस आश्रम की मुलाकात ली थी इसकी अनेक मार्मिक घटनाओं का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है ।

इस संग्रह में गुरूदेव के उदार स्वभाव का वर्णन तथा उनकी धर्मपत्नी के द्वारा गहने बेचकर आश्रम की रक्षा करना, पुत्र और पुत्रियों की मृत्यु के बावजूद भी कर्मपथ से विचलित नहीं होना आदि का वर्णन वात्सल्य व आदर सूचक है । "

"आमार जाबार समय होलो
आमार केनो राखीस धरे ? हृदय वेधक काव्य के साथ गुरूदेव के देहावसना का प्रसंग भी प्रभावोत्पादक है ।

इस प्रकार यह संग्रह दृश्यात्मक, व्यक्तिपरख एवम् अति मार्मिक प्रसंगों से सम्मिलित है । इनकी शैली पाठकों के सामने जीवंत चित्र प्रस्तुत कर देती है यही उनकी कुशलता है ।

{12} चार दिन की : {1978}

प्रस्तुत संग्रह कुछ पूर्व - प्रकाशित रेखाचित्रों का संकलन है । इनमें से कुछ दस-बारह वर्ष पूर्व "नवनीत" में समय समय पर प्रकाशित हुए थे । इस संकलन में 15 संस्मरण व रेखाचित्र प्रस्तुत है ।

"स्वप्न और सत्य" में उनके स्वप्न में घटी हुई घटना और दृश्य वास्तविकता का रूप लेती है । शाम के अंधेरे में, बारिश की झड़ियाँ और दमकती बिजलियों के बीच रेल की पटरियों पर से जाते वक्त पैरों के पास नवजात शीशु का क्रंदन - यह एक दृश्यात्मक संस्मरण है । नवजात शीशु त्यागना यथार्थता की ओर संकेत है साथ ही साथ फिरंगीओं के आतंक से भयभीत वातावरण का भी वर्णन है । कैशोर्यावस्था की उद्दंडता और साहित्य प्रेम के कारण औरों की अवज्ञा करके पुस्तकालय जाना सहज है ।

"चार दिन की", "कालू", चंदन", "ललिता", "आमि के बनलता" "डॉ• खजानचन्द" और "तुई जे पुरुष मानुष" आदि व्यक्तिगत संस्मरणात्मक रेखाचित्र है । "चन्दन" शिवानीजी का नौकर था और "ललिता" उनकी नौकरानी की लड़की थी । फिर भी इन दोनों के साथ पारिवारिक संबंध था ।"चँदन" लेखिका के पूत्र का परम मित्र बन गया था और वही अधिकार अंत तक रखता है । जिसमें बालसहज भावनाएं व प्रवृत्ति दृश्यमान है । उसकी स्वामीभक्ति और पारिवारिक एकात्मकता बतलायी गयी है ।

"ललिता" में बुन्देलखण्डी रीति रिवाजों, रोकर परिवारजनों से मिलना, गाना आदि का वर्णन है । एक ग्रामीण स्त्री की यथार्थता और पति प्रेम भी यहाँ चित्रित है ।

बालक को हम बचपन से ही जिस प्रकार के साँचे में ढालना हो वैसा ढाल सकते हैं इस बात को श्रेष्ठ उदाहरण "तुई जे पुरुष मानष" है । ध्रुव नामक छोटा बालक जो अँधेरे से भी डरता है उसे "तू पुरुष है तू वीर है" कहकर वीरता की प्रशंसा से भर देते हैं तब वही छोटा बालक सच्चा वीर बनकर देश के लिये अँग्रेजों की गोली का शिकार होकर शहीद बन जाता है ।

"कीर्तिस्तंभ" में एक अभिशाप्त कीर्ति का वर्णन है । बस्ती से दूर रहने वाली वनिता "तिलका" की कीर्ति का अनुपम रेखाचित्र है जो समाज का एक ऐसा कलंक है जिसे मिटा नहीं पाते हैं । इनकी उड़ान चाहे कितनी भी हो किंतु मजबूरी भी है । "आपबीती" शिवानी जी का नीजी संस्मरण है जो दृश्यात्मक ढ्ग से प्रस्तुत है । नाट्यमंच पर चलते दृश्य एवं प्रसाधन कक्ष के दृश्य, रंगमंच की चहल पहल आदि है ।

साहब जादे अब्दुल वाजिद साहब शिवानीजी के पिताजी के परम मित्र थे जिन्होंने शिवानी के पिता की मृत्यु के पश्चात् भी घनिष्ठ व वात्सल्यमय संबंध निभाया । गृहस्थ जीवन से दुःखी तथा विभिन्न कोम के होते हुए भी उनकी पारिवारिक एकात्मकता "चार दिन की" में प्रस्तुत है ।

"ये माना जिन्दगी है चार दिन की
बहुत होते हैं यारों चार दिन भी" ।

वैसा ही भावात्मकता और धर्मनिरपेक्षता "दानामिया" का रेखाचित्र भी प्रस्तुत है । जो एक पुस्तक के फेरीवाले थे फिर भी होली, दिपावली पर सभी से गले से मिलना और वात्सल्यपूर्ण व्यवहार आदि देखने मिलता है ।

1 - चार दिन की पृ॰ - 17

शिवानीजी की पैनी लेखनी समाज के किसी भी क्षेत्र से या पहलू से या व्यक्ति से अछूती नहीं रही है । इन्होंने "कालू" में कालू के पात्र के द्वारा चक्षुहीनता पर भी अपनी कलम चलायी है । दृश्यात्मक, संस्मरणात्मक तथा कथात्मक शैली में कालू का चित्रण किया गया है । कालू शांतिनिकेतन में पढ़ता था वह उसकी सुरीली आवाज से अधिक प्रिय था । अपने दिव्यचक्षु से उसने शिवानीजी के रूपरंग का वर्णन किया था और पौषोत्सव पर मिलने के कहने पर उसने परलोक में ही मिलने की बात कही थी । आज वह नहीं है और शिवानीजी उसे फिर मिल भी नहीं पायी है ।

अत: इस संकलन के सभी रेखाचित्र विभिन्नता से भरे हुए हैं । "कालू" में भी उस वक्त की परिस्थिती यानि "अंग्रेजों से युद्ध" का वर्णन मिलता है ।

आचार्य श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे श्रेष्ठ व वात्सल्यमूर्ति से शिक्षक आज कहाँ मिल सकते हैं ? जो कभी रात को भी अपने घर बुलाकर पढ़ाते थे व आकाश दर्शन के अपूर्व ज्ञान का भण्डार लूटाते थे । जो ज्ञान आज के खगोलशास्त्री के रहने पर भी प्राप्त नहीं होता है । इसे "भूली कहाँ हूँ" के अंतर्गत समाविष्ट किया गया है ।

निष्कर्ष :-

गद्य साहित्य के इस आयाम के अंतर्गत इसकी विशेषता के बारे में तथा इसके विविध प्रकार और शैलियों के बारे में भी

हमने जानकारी प्राप्त की है । कुशल कलाकार के द्वारा रेखाचित्र तथा संस्मरण से विशिष्ट चित्र प्रस्तुत होता है किंतु शिवानी जी ने जो संस्मरण तथा रेखाचित्र खींचे हैं वे अपने आप में विशिष्ट स्थान रखते हैं ।

शिवानीजी ने अपने आसपास तथा अपने जीवन में जो- जो देखा, अनुभव किया उसका ही जीवंत और यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। जीवन की हरेक समस्याओं का, अनुभूतियों का तथा अनेक कलाकारों का, व्यक्तियों का चित्रण अपने संस्मरणों में किये हैं । इनकी लेखनी का यह कमाल है कि चाहे किसी भी संस्मरण या रेखाचित्र को लेकर बैठ जाओ लेकिन आपको कहीं भी उबाने वाली बात या अरुचिपूर्ण नहीं मिलेगी । इसका कारण है इनकी संस्मरणात्मक तथा कथात्मक विशिष्ट शैली । इनकी शैली की रोचकता, भावों का प्रस्तुतीकरण तथा जीवन की यथार्थता के कारण ही इनके संस्मरणों में अधिक सरसता है ।

"झरोखा" "दरीचा", "वातायन" या "गवाक्ष" में जीवन की अनेक समस्याओं को तथा यथार्थता को अंकित किया है । "झूला" जैसे रेखाचित्र के द्वारा उनका संगीत प्रेम व्यक्त होता है । भूतप्रेत या पुनर्जन्म जैसे संस्मरणों से भी उनकी लेखनी अछूती नहीं रह पायी है । सरकारी तंत्र या शासक वर्ग, जनता की परेशानियां, हड़ताल, महंगाई आदि नीरस विषयों को सजीवता देकर अधिक रोचकता के साथ यथार्थता प्रस्तुत की है । "शांतिनिकेतन" द्वारा अनेक छोटी मोटी घटनाओं तथा व्यक्तियों का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

इनके संग्रहों में "भूतप्रेत" तथा "पुनर्जन्म" ये रूढ़िगत मान्यता से पूर्ण "भ्रष्टाचार", "नन्ही नन्ही बुंदिया" आदि जैसे सामाजिक जीवन के पहलू को छूते रेखाचित्र है और अन्य सांस्कृतिक तथा बीम्बों के द्वारा चित्रित रेखाचित्र पाये जाते हैं ।

उन्होंने जीवन को बड़ी सूक्ष्मता से देखा है इसी कारण उनके संस्मरण अधिक लोकप्रिय और भावग्राही है ।

संक्षेप में शिवानीजी के संस्मरण और रेखाचित्र भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, एक दृष्टि से संस्कृति का दस्तावेज है तथा संसार सागर का प्रेरणास्त्रोत है । इनका उद्देश्य यही है कि भारतीय संस्कृति, तथा लोगों के गुणों को परिमार्जित कर संभाल कर रखना जो अमूल्य है ।

§4§ बाल साहित्य :

शिवानीजी की लेखनी सिर्फ बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों तथा विवेचकों तक ही सीमित नहीं रही है । उन्होंने समाज के हरेक व्यक्ति को परखा है और अपनी रचनाओं से निहारा है । उनसे बाल मानस भी अछूता नहीं रहा है । बाल-मनोवैज्ञानिक की तरह उन्होंने बच्चों के लिये भी अनेक कहानियाँ लीखी हैं जो निम्नलिखित संग्रहों में समाविष्ट हैं ।

§1§ स्वामीभक्त चूहा ×§2§ राधिका सुन्दरी
§3§ भूत अंकल ×§4§ आईस्क्रीम महल
×§5§ हर हर गंगे ×§6§ बचपन की याद
×§7§ अलविदा

उक्त संग्रहों में से कई संग्रह जो बहुत पुराने संस्करण होने के कारण अप्राप्य है फिर भी जितना प्राप्त हुआ उन्हें यहाँ प्रस्तुत करने की कोशिश की है ।

§1§ स्वामीभक्त चूहा : §1961 तीसरा सं•§

इस संग्रह में §1§ स्वामीभक्त चूहा §2§ मक्कार कौआ §3§ कौआ और तीतर §4§ लोमड़ी और घुघुती तथा राज के धनि में धनि, ये पाँच छोटी छोटी कहानियाँ प्रस्तुत हैं । इन सभी कहानियों का माध्यम §पात्र§ पशु और पक्षी ही है । इन कहानियों के पढ़ने से पता चलता है कि ये सभी कहानियाँ करीब 7 से 12 साल तक के बच्चों के मानस के लिये तैयार की गई कहानियाँ है । मनोवैज्ञानिकता के आधार पर इसी उम्र के बच्चों के लिये ये कहानियाँ उपयुक्त है ।

×शिवानी के पत्र के आधार पर निर्दिष्ट है किंतु अप्राप्य ।

स्वामीभक्त चूहा" के द्वारा बाल मानस पर छोटे से चूहे द्वारा उपकार की महत्ता दिखलाई है । चाहे कैसे भी प्रलोभन मिले फिर भी जिसका अन्न खाया है उसकी भक्ति करके कभी भी गद्दारी नहीं करनी चाहिए । ये सबक सीखलाया है । सौदागर के परिवार की कथा यहाँ प्रस्तुत है, चूहे की प्रवृति बच्चों को अधिक मनोरंजकता के साथ उपदेश बोधक है । जैसे सौदागर की पत्नी ने पूछा, चूहा तूने क्या खाया तू इतना मुटाया कैसे ? तब चूहा बोला, "मालकिन ।

रेशम के थान, पुट्टी के कान
चार जोड़ी मूंछे, भैंसों की पूंछे,
पच्चीस रोटी और पुट्टी{सौदाकर की कपटी दूसरी बहू}की चोटी।
यह माल खाया जो इतना मुटाया ।"

कौआ और तीतर" में कौए की कुटिलता [1] दिखलायी है और कुटिलता या बुरे कार्य का फल क्या मिलता है इसे कौए और तीतर के प्रतीकों से समझाया है ।

"लोमड़ी और घुघुती" कहानी बोधदायक है। संसार में कोई भी बड़ा या छोटा याने ऊँच-नीच नहीं है । दोस्ती में ये भेद नहीं रखा जाता है । कहानी बड़ी रोचक व मनोरंजक है । छोटी सी घुघुती मित्र लोमड़ी को हँसाने के लिये क्या क्या करती है और किसानों को आपस में पिटवाती है इससे बच्चों को अधिक मनारंजन मिलता है । कुमाऊ के जंगलो में आज भी लोमड़ी की पीठ पर घुघुती प्राय: दिखाई देती है । इस बात का समर्थन इस कहानी से विदमान है । कहानी मनोवैज्ञानिक है ।

1 - स्वामीभक्त चूहा 5 पृ० 8

"मिथ्याभिमान राजा रावण का भी नहीं टिका था" ये लोकोक्ति जगमशहूर है । इस बात का समर्थन "राज के धनि, मैं धनि" में प्रस्तुत है । राजा प्रीतमदेव को अपने धन - वैभव पर बहुत गर्व था और राज-दरबार में कई बार वह अपने वैभव की प्रशंसा लोगों से करवाता था किंतु एक छोटी सी चिड़िया ने उनका गर्व खंडन किया । राजा को अपने अभिमान का बदला अपनी नाककटवा कर चुकाना पड़ा ।

इस प्रकार इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ मनोरंजक व बोधक है । प्रत्येक कहानियाँ कुमाऊ प्रान्त की है ।

§2§ राधिका सुन्दरी : §1981§

उक्त संग्रह में "राधिका सुन्दरी" §चालाक लोमड़ी और भालू", बुद्धिमानी बकरी" "बिल्ली और मूसारानी", "घमण्डी हाथी और बुद्धिमान चूहा" तथा पिददी और हाथी" कहानियाँ संग्रहित हैं । इन कहानियों से मित्रता, बुराईयों का परिणाम, नम्रता व प्रेम की जीत आदि अनेक उपदेश प्राप्त हैं तथा इसमें मनोरंजन भी है । इन कहानियों को लिखते समय शिवानीजी ने 10 से 12 साल तक के बच्चों को नजर के सामने रखा है ।

1 "राधिका सुन्दरी" वनराज केसरी की सुन्दरी कन्या का नाम है । जिसका ब्याह गीदड़ सरकार बिजैसिंह के पुत्र खड़कसिंह के साथ छल से हुआ था । हर रोज अनेक शिकारों की बड़ाईयों से एक दिन खड़कसिंह के साथ राधिका जाती है । बांसों के झुरमुट और चित्तलों से डरकर खड़कसिंह छुप जाता है । कुछ पूछने पर राधिका को गालियाँ सुनाता है । आखिर जंगली भैंसा सामने आने से गभरा-कर राधिका की शरण में आता है राधिका एक ही बार में भैंसे को चीर डालती है फिर भी खड़क अपना बड़प्पन नहीं छोड़ता है जिसका

1- राधिका सुन्दरी - पृ.-7

अंत बुरा आता है । नीच व्यक्ति का ओछापन फौरन बाहर आ ही जाता है । यहाँ पर गीदड़ के द्वारा कहे जाने वाले ऐसे उचित शब्द प्रयुक्त है । जैसे - ऐ रघुली पैर दबा, झाडू लगा" "भामरिया भूत अनाड़ी कीबेटी" "चुप ससुरी" है तो तेरी भाभरी बुद्धि ।ऽ.... धत् ससुरी कहीं ऐसे भी अरना भैंसा मारा जाता है । हिन्दूनारी के लक्षण के अनुसार राधिका ने गीदड़ की असलियत पहचान कर कान, पूंछ उखाड़ दिये और भगा दिया किंतु अपना सुहाग नहीं उजाड़ा । खानदानी उच्च संस्कार के कारण पति के सामने कभी कुछ भी नहीं कहा था और बादशाही खानदानी से स्वतंत्र जीवन जीने लगी ।

§2§ चालाक लोमड़ी और भालू :

प्रस्तुत कहानी से बोध मिलता है कि कभी अपने मित्र से दगा नहीं करना चाहिए और मित्रता भी बराबरी के और अच्छे मित्र की करनी चाहिए । अपने से नीच की मित्रता का फल बुरा ही होता है । यहाँ पर भी पुनरावृत्ति हुई है । चालाक लोमड़ी में जो नीचता के गुण थे वे यहाँ पर प्रस्तुत है जैसे भैंस चराने की अपनी बारी हो तो भूखी मार कर दूध के लिये भालू को देना और भालू की बारी हो तो छककर दूध पीना, भालू को बर्रों के छत्ते पर भेजना, भैंस को मारकर खाने के इरादे से खड्डे से बाहर निकालने के लिये चांडालों को बुलाकर उनके घरों को आग लगाना; झील में भैंस की पूछ रखकर भालू से खींचवाकर गिराना आदि नीचता का प्रमाण है ।

अन्याय और दुष्टता के प्रति बदले से बच्चों के मन में आनन्द और संतोष की अनुभूति है ।

(3) "बुद्धिमानी बकरी" में नम्रता और शांत स्वभाव की ओर संकेत है । नम्रता से व प्रेम से किसी के भी दिल जीत सकते हैं । इस कहानी का शीर्षक सार्थक है । वैसे हम किसी भी शांत, ताकहीन और नम्र व्यक्ति के लिए "बकरी जैसा" या गाय जैसी" शब्द का प्रयोग करते हैं । यहाँ पर स्वार्थी मनुष्य के पशु प्रेम की झलक देखने मिलती है । सौदागर ने बकरी जवान थी तब तक अच्छी तरह से संभाल ली किंतु बुड्ढी हो जाने पर काट कर पकाने की बात कही । चाहे शेर से बचने के लिये यह बकरी की युक्ति हो फिर भी यह यथार्थता की ओर निर्देश है । हिन्दु धार्मिक विधि से भी अभिमुख किया है जैसे "शेर ने प्रेम से जीविका बकरी की सेवा की और मृत्यु पश्चात् हरिद्वार गंगा तट पर शव दाह दिया ।

(4) "घमण्डी हाथी और बुद्धिवान चूहा" कहानी में घमंड का फल बुरा मिलता है यह बतलाया है । बुद्धिवान अपने चातुर्य से किसी का भी घमंड उतार सकता है । यहाँ चूहे पंडित ने अपने चातुर्य से खाई खोदकर हाथी के गिरने पर तथा बिलखने पर सज्जनता दिखाकर बाहर निकाला । इस प्रकार छोटा सा चूहा हाथी को पराजित करता है ।

(5) "बिल्ली और मुसारानी" में बुढ़िया बिल्ली के पुत्र की मुसारानी से ब्याह की बात है यहाँ बिल्ली की शिकार के लिए युक्ति है । किंतु बारात लेकर बील के पास आने पर भूखे दुल्हे बिल्ले का दुल्हन को खाने की बात सुन कर चौकन्ने चूहों का भाग जाना और बच जाना । "पाँचों अँगुलिया घी में होना", छक-कर खाना" आदि मुहावरों का उचित स्थल पर प्रयोग है ।

§6§ "पिद्दी और हाथी" में भी उक्त कहानी की पुनरावृत्ति हुई है । यहाँ पर भी हाथी अपनी मस्ती और अभिमान से छोटी पिद्दी के छोटे छोटे बच्चों को पेड़ समेत उखाड़ कर कुचल देता है। और कठ फोंलिया तथा अलंगार की सहायता से पिद्दी बदला लेती है ।

चाहे कितना भी छाटा जीव भी निर्धार करने पर कठिन कार्य को सरल बना सकता है ।

निष्कर्ष :-

प्राप्त बाल साहित्य के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि शिवानी ने एक और सुसंस्कृत लोगों के लिए, विद्वानों के लिये उत्कृष्ट साहित्यिक रचना की" है तो दूसरी और समाज के कई लोगों को मनोरंजन तथा अपना संदेश देने की क्षमता से भी कलम उठाई है तथा चहकते नन्हे नन्हें बच्चों के लिये भी उतनी ही उपयुक्त शैली से कहानियाँ लिखी है । आम तौर पर छोटे बच्चों की रुचि अधिकतर पशु-पक्षी राजा-रानी आदि की ओर ही रहती है अत: उनकी बाल कहानियों में अधिकतर पशु-पक्षी का ही निर्देश है ।

बच्चे भविष्य के नागरिक है उनके मस्तिष्क में प्रेम, भाई-चारा एकता आदि गुणों का आविर्भाव हो इस हेतु से सभी कहानियों में दोस्ती का महत्व तथा प्रेम का साम्राज्य ही बतलाया है । पारिवारिक संबंधों और उक्तियों की भाँति पशु-पक्षियों की भी यही ढंग से बात कही है ताकि बच्चें, समझ सके । इस उम्र के

बच्चों के मानस पर पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों से परिचित तथा हिंस्र और अहिंसक उदाहरणों का असर अधिक रहता है इस बात की ओर ध्यान दिया गया है । भाषा अधिक ओजपूर्ण छोटे बच्चों की समझ में आये ऐसी तथा मनोरंजन पूर्ण घटनाओं का वर्णन और उचित सरल मुहावरों तथा शब्दों का प्रयोग है ।